



This is a digital copy of a book that was preserved for generations on library shelves before it was carefully scanned by Google as part of a project to make the world's books discoverable online.

It has survived long enough for the copyright to expire and the book to enter the public domain. A public domain book is one that was never subject to copyright or whose legal copyright term has expired. Whether a book is in the public domain may vary country to country. Public domain books are our gateways to the past, representing a wealth of history, culture and knowledge that's often difficult to discover.

Marks, notations and other marginalia present in the original volume will appear in this file - a reminder of this book's long journey from the publisher to a library and finally to you.

Usage guidelines

Google is proud to partner with libraries to digitize public domain materials and make them widely accessible. Public domain books belong to the public and we are merely their custodians. Nevertheless, this work is expensive, so in order to keep providing this resource, we have taken steps to prevent abuse by commercial parties, including placing technical restrictions on automated querying.

We also ask that you:

- + *Make non-commercial use of the files* We designed Google Book Search for use by individuals, and we request that you use these files for personal, non-commercial purposes.
- + *Refrain from automated querying* Do not send automated queries of any sort to Google's system: If you are conducting research on machine translation, optical character recognition or other areas where access to a large amount of text is helpful, please contact us. We encourage the use of public domain materials for these purposes and may be able to help.
- + *Maintain attribution* The Google "watermark" you see on each file is essential for informing people about this project and helping them find additional materials through Google Book Search. Please do not remove it.
- + *Keep it legal* Whatever your use, remember that you are responsible for ensuring that what you are doing is legal. Do not assume that just because we believe a book is in the public domain for users in the United States, that the work is also in the public domain for users in other countries. Whether a book is still in copyright varies from country to country, and we can't offer guidance on whether any specific use of any specific book is allowed. Please do not assume that a book's appearance in Google Book Search means it can be used in any manner anywhere in the world. Copyright infringement liability can be quite severe.

About Google Book Search

Google's mission is to organize the world's information and to make it universally accessible and useful. Google Book Search helps readers discover the world's books while helping authors and publishers reach new audiences. You can search through the full text of this book on the web at <http://books.google.com/>

13. E. 38. Hindi Vet 9

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.

Presented

by

Munshi Abdul Kishore.

4/
likramā - vilāsa.

विक्रमविलास ॥

जिसको

कन्नौज के रहनेवाले मुन्शी देवीसहाय और फरु-
खाबादी नसरतख़ां सौदागरकी फ़र्मायशसे
चौबे भोलानाथ ने

बैतालपञ्चीसी जो दोहे चौपाई आदि अनेक
छन्दोंमें उरुया करके बड़ीशुद्धता पूर्वक बनाया
और मुन्शी बिहारीलाल के प्रबन्धसे समर
हिन्द मैनपुरी में छपा गया ॥

वही

दूसरी बार

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोरकेछापेखानेमेंछपागया ॥

अक्टूबर सन् १८८९ ई०

श्रीगणेशायनमः

अथविक्रमविलास ॥



दोहा ॥

मंगलमूरति रावरी हियधरि पावप्रसाद ॥
गजआननभाननविघनटारनविषमविषाद १
शीश जटा छविकी छटा अर्द्धचन्द्र घरभाल ॥
भक्तवदलसोइमोहिंपर शङ्कर होऊदयाल २

कवित्त ॥

तोरिफोरिडारंगढप्रवलनरेशनकेजीतेदेशदेशजोरआपनीभुजान
के । मेटेहैंकलेशभेषकपटकसाजनकेआजिजनिवाजपैजपुरेखानदान
के । भोलानाचजाकोयशगावतफर्याशईशदेवतासुनीशजनजानतज-
हानके । भयेहैंनऐसेभूपहोयंगेनआगेकहूंकहंलौबखानोंगुणविक्रम
सुजानके ॥ ३ ॥

दोहा ॥ अबमनावगुरुचरणरज विप्रनकोशिरनाय ॥
वर्षतहौइतिहासकहू सुखमसीमतिपाव ४

मोदकछन्द ॥ भुवमण्डलधारवसैनगरी । अतिसीमसुआसन
सुखभरी ॥ तहँराजसुगन्धर्वसेनकरै । दुखदीननकेअतिनित्तहरै ५
वहभूपसुदेवकेलोकगयो । अशजाकोतिहंपुरमाहिंछयो ॥ सुखशङ्क
तहांकोभुआलभवो । तिनसुखप्रजाकोअनेकदयो ६ ॥ दोहा ॥
कहूककालबीतेवज्जरि मारियहूभूपाल ॥ धारिशीशपरछपुनि
विक्रममवोभुआल ७ हियदुष्टनकोदण्डवज्ज कियविप्रनकोकाज ॥
मट्यादाकेकाजजग प्रकटभवोसुरराज ८ ॥ मोदकछन्द ॥ तिन
जियमेंअपनेधारिलई । मतितेवहरीतिप्रतीतिभई ॥ भवमेंभ्रमिनो
हियठानिलियो । पुनिआतकोराजकोभारदयो ९ देशविदेशन
भूरिकियोअम । जातरछोमनकोसबविभ्रम ॥ लख्योएकसुविप्र

तपोवनमें । कछु याचतहोअपनेमनमें १० ॥ दोहा ॥ ह्रैप्रसन्नतवदेवता
 दिवअमतफलताहि ॥ होयअमरभुवलोकमें जोवाकोहिजखाहि
 ११ तिर्गनिजपत्नीसोकस्यो दियेमाहिफलदेव ॥ खावअमरसोहोय
 मर सुनयाकोवहभेव १२ ॥ तोमरछन्द ॥ बहसुनीपत्नीवात । बड
 ताडिबोनिजगात ॥ जलसोभरेतिननैन । कछुकहनलागीवैन १३
 तुमसनीहोहिजराव । ममवैनचित्तलगाव ॥ यहकर्मभिजानीव ।
 यातेभलीहीमीव १४ यहदीजियेफलजाव । भुवपालकोसुखपाव ॥
 सुनिगयोराजाहार । पंडुवाथोप्रतिहार १५ फलदिवोराजाहाय ।
 लोकस्योपुनिरनाथ ॥ याकोकहागुणविप्र । कहिमोहिअवतुषिप्र
 १६ महराजकोफलखाय । सोअमरनरहूजाय ॥ यहयोग्यआपहि
 नाथ । लखिजगतहोयसनाथ १७ ॥ दोहा ॥ लियोभट्टहरिभूपक
 दियनिजपत्नीहाथ ॥ रहवसदाआनन्दसो खावसुफलशुणगाथ १८
 कहिप्रियवचननरेणपुनि आयोनिजदरवार ॥ रानीकोकोतवालसो
 हतोनेहनिरधार १९ तिनफलदिवताकेकरहि उनदियवेश्याहाथ ॥
 बडतप्यारसोतासुके गाहकसवगुणगाथ २० ॥ छप्पै ॥ वेखाकियो
 विचारफलहिचलिराजहिदीजे । होयअमरभुवपाल तिहुंपुरवध
 कोलीजे ॥ जाथतुरतदरवार राजकेकरमेंदीन्हो । देखिभवोमन
 क्रोधआपहततवहीचीन्हो ॥ यहससुभित्तमेंआपनेप्रचुरसुद्रव्य
 मंगाइके । दैपानदानताकहूँपति विदाकरोसुखपाइके २१ ॥
 दोहा ॥ ह्रैउदासदपनेकस्यो भूँठोयहसंसार ॥ तातेतजिजगभंग
 सुख भजियेहरिनिरधार २२ यहकहिकेमहलनगयो करीनकछु
 अनरीति ॥ कहीकियोफलकोसुसुखि दियोजुहमकरिप्रीति २३
 मैफलकोभक्षणकियो दियेजुमकरिप्यार ॥ वहीकाहिकेदपतिने
 दिखराबोतिहिवार २४ दियोनप्रतिउत्तरबडरि धारिलियोति-
 हिमौन ॥ लखिकेऐसीप्रीतिदप आयोअपनेभौन २५ सुदकियो
 फलकोबडरि भोजनकियोनरेण ॥ धरिचितयोगउदासहूँ छांडि
 दिवोनिजदेश २६ ॥ कवित्त ॥ छांडोहैसकलसुखसम्पतिऔराज
 पाठछांडीसवप्रीतिनिजकलपरिवारकी । इंद्रकेसमानभोगकरत
 दिनरातिसोछांडिलियोयोगमतिउदितउदारकी । भोलानाथ
 कहैचख्योवनकोदपतित्योहीकीनीननेहदेहपैजपालीविचारकी ।
 कीन्होहरिध्यानमनछांडिकेकलेशजगआन्योहियज्ञानअतिकरि
 मतिसारकी २७ ॥ तोमरछन्द ॥ यहसुनिकैसुरराज । दपछांडियो

निजराज ॥ भेजोतहांद्रकदेव । सबकह्योतासोभेव २८ धारा नगर में
 जाय । करिसकलरक्षाभाय ॥ यहदिवोताहिजताय । अमदिवो
 सकलभजाय २९ यहभईदेशविदेश । नृपभवोयोगीभेष ॥ यहसुनी
 विक्रमवात । सोआइयोवहिरात ३० नृपकियोनग्रप्रवेश । यहदेव
 कालसुवेश ॥ नृपकोसुरीक्योआय । तूकीनहेकितजाय ३१ कहिनाम
 गुणअनु रूप । नृपकहीविक्रमभूप ॥ ममपूरीवहसुखधाम । ताको
 चलोअभिराम ३२ ॥ हरिगीतछंद ॥ मोहिंकरनरक्षासकलपुरकी
 देवतनभेजोसही । हौंजानदेहौंतोहिंनाहीयुद्धकरिलोमोपही ॥
 यहसुनिनृपतिनेक्रोधकीन्होडारितिहिभतखलियो । दिखराय
 ताकोजारअपनामारिकैव्याकुलकियो ३३ पुनिकहीदेवसोवात
 नृपवरएकअवसुनिजीजिये । पाछेसुसातोहीपकोचितवाहिराउध
 सुकीजिये ॥ फिरकहीराजावातवासोकबाकहतुआपनी । दैकख
 सुनिबेलग्योभपतिसकलदुःखनशावनी ३४ ॥ भवंगछंद ॥ प्रगटदेव
 तिहिकालराजसोबोलियो । चंद्रमानकोनामतवहितिमपालियो ॥
 एकदिवसमहराजनृपतिवनकोगयो । देखितपखीएकवडतचितसु-
 खलियो ३५ उलटौदेख्योताहिधूमकोपीवतो । अचरनमान्योभप
 रहौक्योंजीवतो ॥ आयकहीदरवारनृपतिवहवातहै । लावैतपसो
 जायलाक्षसोपातहै ३६ ॥ सोरठा ॥ सभामध्यतिहिकाल आयवे-
 श्यायहकह्यो ॥ हौंलाकंततकाल तपसीकन्धवडाधसुत ३७ विदा
 कियोदैपान नृपताकोताहीसमय ॥ चितमेंअतिसुखमान गर्दवेश्या
 द्विजनिकट ३८ ॥ मोदकछंद ॥ त्यहिजायकेबलअनेककिये । बुधिके
 भटपाठसोखोलिदिये ॥ मनतेवहखेलउपाजिनयो । हलवात्यहिके
 सुखमाहिंदयो ३९ ॥ दोहा ॥ गवाघाटिहलवासकल पुनितिहि
 औरलगाय ॥ द्वैकदिनामेंपुष्टकरि कियोसोचितपनाथ ४० पछीतप-
 सीवातयह क्योआईइहिठौर ॥ कहीदेवकन्धासुमें विहरतवन
 शिरमौर ४१ कहीतपखीवातयह कहांतुम्हारोगह ॥ सुनिचितमें
 आनंदभयो बोलीबचनसनेह ४२ निकटयहांतेगेहमम चलिबेमेरेसा
 थ ॥ गयेदुहंमिलिकैतहां दियेहाथमेंहाथ ४३ पटरसभोजनकोतहां
 करवायोतिहिवार ॥ नितप्रतियोआनन्दसो तनमेंउपज्योभार
 ४४ होनहारसोह्वेरहै कीन्होतासोभोग ॥ करतभोगकेगर्भतिहि
 रक्षोदैवकेयोग ४५ बीततहीदशमासके प्रगटभयोसुतसोभ ॥ अयो
 मासद्वैचारिको कहीवामसुखजाय ४६ चलिकरियेतीरपगमन जाते

प्रायेण पाप ॥ धरि कथाताकेतनत्र पुनिमंगवलीसोत्राम ४७ ॥ तोमर
 छंद ॥ लेगईराजाहार । तिहिसंगतपसीवार ॥ वहलफ्योवपनेकर्म ।
 सुसुभोदियेमेवर्ष ४८ सबदेखिबोहरवार । कीनीसोकामउहार ॥
 यहकहिगईजायात । तेषुनिबोसमतात ४९ यहसुनीयोगीनात । सब
 सुसुभिलीहोघात ॥ ममयोगक्रीहोभंग । मनुबुरोलागबोढंग ५०
 निजकधतेसुतडारि । वमक्रोगधोरिसघारि ॥ पुनिकरनलागबो
 योग । सभर्षादिहीहोभोग ५१ ॥ होहा ॥ नीतिकहुइकदिवसके
 राजगयोसुरलोक ॥ सिद्धयोगयोगीकिबो नाथभयोसवशोक ५२
 सकलभेदेबावातको सुनिलीजैमहराज ॥ तीनिमसुषुठमएकदिन
 पैदामयेसुसाज ५३ तुमराबाकेगेहमे द्वितीयतैलकरतार ॥ तृतीय
 सुधोगीगेहमे पैदामयोकुमार ५४ अथोग्रजापतिगेहसो योगीको
 सुतघाव ॥ तामेतेलीसारके हीहोराज्यनशाथ ५५ ताहिटांगिभव
 भूमिमे सिरससोतरेकेबीच ॥ तेरेमारनकेखिबे भवकरतहैबीच ५६
 तातेमेतोसोकहत त्रासोरउडुधिमार ॥ यहकहिकेसुरलोकको
 गयोदेवतिहिवार ५७ राजानिजमन्दिरगयो प्रातःप्रायहरवार ॥
 त्रितैभत्यहैराजमे तेभायेतिहिवार ५८ सबहीमिलिनपरदेई भो
 यानंदवडंधोर ॥ धर्मराजलागबोकरन सुखितप्रजातिहिटोर ५९
 तोमरछंद ॥ तहैकरतधर्मसुराज । वाच्योसुवशमहराज ॥ तहैघांति
 शीलसुनास । योगीसुधावोवाम ६० सोलियेइकफलसाथ । दिव
 राजकेतिमहाय ॥ क्रिषदेवनातीवाह । लखितासुकीमर्षाह ६१
 सोदियोमंधीहात । तामेतेहीनहिंवात ॥ यहनित्यप्रतिकखदेव ।
 राजासुखितलेख ६२ ॥ होहा ॥ एकदिवसयालाविषे गयोख-
 खनहराज ॥ प्रहंसितहांयोगीसोफल दिबोहायमहराज ६३
 राजाकरतेफलउहरि गिरगोभमिततकाल ॥ शाखामगतोरगो
 ठरत तातेनिकरगोखाल ६४ निरखिषभाचक्रितभई जगत्तनाति
 तिहिज्योत ॥ दिनकरत्रिकरसमुहजिमि कांपनसम्भउहोत ६५
 कछोवचनताहीसमय योगीप्रतिमहराज ॥ इईइतिकसम्प्रतिहमे
 कहौकौनसेकाम ६६ इतनीजगहनजाइये कबहुंखालीहाथ ॥
 राजासुखनखयोतिबी सुमडंवीतिवपनाथ ६७ नितेदियेफलआप
 कर सबनमध्यहेलाल ॥ यहसुवकप्रमयाहारते मंगवायेतिहिकाल ६८
 फलमुडवायेतासमय रतनकडेसवशाहिं ॥ तवबुलायवपपारखी क-
 थोवचनचितवाहिइइजोकहुकीमतिरतनकी कहौसत्तमुससोय ॥

विक्रमविलास ।

६
 केवलधर्मरहैसुभव औररहैनहिंकोव ७० ॥ तोमरछंद ॥ सुनुवपति
 परमप्रवीन । हररंगरत्नवीन ॥ इकदेशकीमतजान इकलालकीप
 रमान ७१ यहसुनेराजावैज । प्रफुलितभवेअग्निनेन ॥ तवखिलति
 लियमंगवाय । दिवजौहरीकोराव ७२ कीन्होविदातिहिवार ।
 पुनिगयोनिजदरवार ॥ करगहेयोगीहाय । अबसकलजनतिहि
 साय ७३ ॥ छपै ॥ सुनिययोगीनाथइतेककलमोहिखौदीने । आप
 दिगंबररूपकहातेयेवशकीने ॥ इतनीवातेराजनहिंकाहसोकहिमे
 यंचमंचअधर्मश्रीषधी लहिचुपरहिवे ॥ मर्मसोअपनेगेहोक्रुव
 चोरिजोलीजिये । निजअवलसुनेकटुवचनजोबेसवगुप्तसुकीजिये ७४
 पड़ेप्रथमजोअवलवातआकीतिहिकहिजे । मध्यमदूखकानससुभि
 तिहिचुपहैरहिजे ॥ पड़ेमध्यमठअवलतासुकोठीकनजानो । कही
 नीतिकेमध्यसुखदृष्टपसांचीमानो ॥ तुमबलोसंगएकांतमेंकहिहौ
 सबसमुभाइके । दोषहोतताकोवृष्टपतिकहैअधर्मीपाइके ७५ ॥ दोहा ॥
 मैमशानकीभूमिमें सिद्धकरतककुकाज ॥ सिद्धहोवनवनिहिदुव
 तहैआयेमहराज ७६ वचनदिवोराजातहां आंजगोतुवगेह ॥
 योगीतवसामासकल लईकरनिकरिनेह ७७ गवोवैठिशवभूमिमें
 धरिमनकहठकुसाज ॥ बख्योअकेलोवीरवर राजनकोधिरताज ७८
 बागीकोदंडवतकरि बैठिगयोतिहिपास ॥ देखिभयंकरनूरतिहि
 भयोनिचित्तउदास ७९ देखेतोचहुंओरहै भूतप्रेतबैताल ॥ बागी
 तिनकेमध्यमें करनवजावतताल ८० कहीवृष्टपतिकरजोरिके जोकहु
 आजाहोव ॥ सोईकृतअवकीजिये कहियेसुखतेजोव ८१ इहांसे
 दक्षिणओरको कोशहैकहैठीर ॥ तहांसिरसकोटहै जाहज-
 हांकरिदौर ८२ लटकततरुमेशवतहां लावोताकोबाय ॥ ऐसे
 वृष्टकोतासमय कहीसिद्धसमुभाय ८३ बागीकोधिरनायके
 चलैगयोवृष्टवीर ॥ कवहुंमुखमारेनहीं मरीकठिनअतिभीर ८४
 तोमरछंद ॥ इकतोअंधेरीराति । पुनिवर्षजलवहुभांति ॥ जोअरकोई
 जाय । सबधीरताविनशाव ८५ बहूंओरभूतबैताल । करगहेमनुज
 कपाल ॥ डाकिनिफिरैबहुंओर । नाचतकरतअतिशोर ८६ गर्जत
 फिरतवनशेर । गहिलेहुंअपयहिबेर ॥ यहशब्दपूरितभूमि । तव
 लख्योवृष्टनेभूमि ८७ यहवहीबागीभाव । जोदियोदेववताय ॥
 अनशोचिवृष्टपयइबात । आगेबख्योवनजात ८८ ॥ दोहा ॥ देख्यो
 तरुवरजावकै विक्रमपरमउदार ॥ जगतअग्निउजालामनों सहित

सहायसहाय ८९ क्रियोनमनमेंभवकछू चख्योसुतरूपेजाय ॥ मारि
 हाथइकषणको दीनोताहिगिराय ९० गिरतउद्योवहरोयकौ
 लख्योवृषतिनेसोव ॥ द्वैप्रसन्नमनमेंकछ्यो जीवतहैयइकोव ९१
 गीतिकाखंड ॥ पूछीवृषतिनेवाततासोंकइउतुमबरकौनहौ । कैभूत
 प्रेतपिशाचकोईक्योरद्योगहिमौनहौ ॥ यहसुनतखिलखिलहस्वो
 वइतववडरिचदितरुप्रैगयो । पुनिवृषतिजियमेंक्रोधअतिकरितासु
 कंखावतमयो ९२ तूकौनहैब्रंडालमोसोंकयाकउसवआप्रनी ।
 योचतवृषतिमतिहोयतेलीदईजोदेवसिखावनी ॥ अतिलख्योसा-
 हसवृषतिवरकोवाँधिसवचाइरितिबो । तूकौनहैनरपालसोक-
 हिख्योनहिंउत्तरदिबो ९३ इनकहीविक्रमनाममेरोखिवेतोको
 जातहौ । पूरीभईमनकामनाखलितोहिंपरमसिखातहौ ॥ तबकही
 अबतौकख्योहौमैपरतोरिहायमें । सुखबोखिहेविनकहेजोतरहौ
 नहिंतुवसायमें ९४ ॥ दोहा ॥ राजानेताहीसमय कीन्होतचनप्र-
 मान ॥ जोसुखतेकलुबैकहौफिरिअइवोनिजधान ९५ बडरिक्की
 बैतालने सुनइवतुरनरनाथ ॥ सुनइवचनममअवचदै कहतनीति
 कीगाथ ९६ जेपयिउतहैंचतुरनर तिनकेरइतअनन्द ॥ मूरखकूमति
 कुजातिते कलहकरतअतिमन्द ९७ कहतकथावातेसुखद मारग
 अमनरहाय ॥ राजनीतिमेंप्रीतिसों सुनइवृषतिचितलाय ९८ प्र-
 यमकहाबीधीभई पूरीसुनइप्रबोन ॥ सरवैतालमनतोवअति वि-
 क्रममगतहैमीन ९९ ॥

पहिली कहानी ॥

दोहा ॥ कहवैतालराजासुनइ करिमनवचनसनेइ ॥ नाशतदुख
 संदेहकी वपवरकथासोएइ १ ॥ तोमरखंड ॥ एकपूरीकाशीनाम ।
 तइंयम्भुकाईधाम ॥ जइंवसतलोगप्रवीन । बडधर्मविद्यालीनर तिहि
 नामसुकुटप्रताप । अतिसुमरवरवृषआप ॥ तिहिवज्रसुकुटसोपूत ।
 उप्रमासोतासुचभूत ३ महदेविताकीवाम । सुंदरखरूपललाम ॥
 कहिमंचसुतहिमईट । खेजनगबोआखेट४ तिहिलख्योवनकोजाय ।
 योभाकहोनहिंजाय ॥ प्रफुलितकमलतालाव । संवृक्तकरिकेआवधु
 चडंधोरगुञ्जतभंग । मनोमन्दकरतअनंग ॥ अतिहासवासितठौर ।
 वृषजोहिबोधिर्मौर ६ जइंखसतहरिकोषाम । जेहिलखिइरत
 मनकाम ॥ वृषकियोदर्शनजाय । आनंदचित्तवदाय ७ ॥ दोहा ॥
 कम्बाकाइवृषतिकी निकटसरोवरआम ॥ क्रियोस्नाननिर्मलस-

खिलप्रतिदिव्यहर्षवढाय ऽलिवेसहेलीसंगसवफिरतिसरोवरतीर ॥
शीतलमंदसुगंधप्रति चङ्गदिधिवहतसमीर ९ इतमपसुतताहीस-
मय लखनसरोवरकाज ॥ गयोछांदिमंचीतनय साजेसकलसमाज १०
लखिकैताकेरूपकोविवशभयोमनकाम ॥ कामघटाजनमघघटा वि-
छुछटासीवाम ११ ॥ कवित्त ॥ कामकीसवारीकैधौमन्मयकटारी
नवननैननउजारीकरीरहीआलसभारसो । सोइतहंगारकिये
आननकोओपदियेओपदियेचंद्रमाकोसुषमाअपारसो ॥ तैसिये
समीरधीरवहतिसुगंधसनीमिलतसुवासचलीफूलनकेहारसो । वि-
त्तकेपिधारसो कितनकेहंगारसो हिलमिलहंगनगईभूपतिकुमार
सो १२ ॥ दोहा ॥ भयोविकलपकोतनय लखिहूँदीवरप्रयाम ॥
जारततनकोअनखविनु अरेकुटिलमनकाम १३ राउपुषिकाकुंवर
को दीन्होबिरहवताव ॥ पुष्पकमलकोशीघते अवसनकोठिगलाव
१४ बजरिकुमतिकेदंतसोअरसनलिधोदवाव ॥ पुनिलगायदिवसो
खिवोदिवसवभेदवताव १५ बुरखपसमभयोनीमगनवनीओकी-
न ॥ आओठिगनिजमिषकोसकलभेदकहिदीन १६ ॥ मोतीदामछंद ॥
कहीवपकोसुतनेवहवात । लखीरुकसुदरिनवननतात ॥ कहाकहि
त्रेतिहिरूपअधीन । भवेहगवासरिताकेजीन १७ अहोबहकामकी
रीतिनई । चिततैहितैगतिभूलिगई ॥ बहवातनताकीसुकानघरी
मनभेअरबाचलिवेकीकरी १८ चदिकेवहअखगवेनिअदेश । भयो
वपकोकहुअद्भुतभेय ॥ तनकीसुधिवाकोननेकरही । मतिकामकेपंध
मेंभूलिगही १९ ॥ दोहा ॥ यहलखिकेताकीदशा मंचीसुततेहिवार ॥
पहनलाग्योवातसव करिकैमनमेंप्यार २० ॥ मोतीदाम छंद ॥
जिहिप्रीतिकेपंधमेंपावदयो । मणिवेचिकेपाअरमोललवो ॥ पहिले
नजियोविरहातनपाव । जुजियोतीलिवोदुखअंगलगाय २१ सुनिउ-
त्तरदीनसुखेदवढाय । दिवोहमयामगमेंअवपाव ॥ विधिकीगति
काहनजानिपरै । बहराजकोनेकमेंरंककरै २२ ॥ दोहा ॥ चलत
समवपकीसुता कछोकहुमहराज ॥ केहगमिलतनसधिरहीहरी
सुमतिरतिराज २३ मिलनकठिनहैतासुको कैसेमिलिहैसोय ॥ जो
मिलिहैवहप्राणप्रिय तीममजीवनहोत २४ पुनिपुछीमंचीतनय
सत्यकहीसववात ॥ करीसैनकहुचलतमें सकलसुनायोतात २५
तोबरछंद ॥ मोहिलखतइतबीवात । कीन्होसुसुखिअवदात ॥ इक
कामलफूलसुभाय । निजशीघतेसुकराय २६ लिवअवणसोतिनछाय ।
मुनिकुतरिदंतपनाव ॥ लिवअरखसोसुदवाव । कीन्होइदवसो

लाव २७ ॥ दोहा ॥ यहसुनिकौदीवानसुत कहैविहंसिकैबैन ॥ हम
समभेउननेकरी सांघीतुमसौसैन २८ ॥ तोमरछंद ॥ तुमससुभि
लीनीजोय । हमसोकहौअवसोय ॥ अवसुनज्जराजकुमार । तिहि
चरितअमितउदार २९ ॥ दोहा ॥ करनाटकहैदेशमम पद्मावतीसो
नाम ॥ पितानामहैदंतवट तुमममहियकेधाम ३० यहसुनिकैहर्षित
भयो कछोवचनपरवीन ॥ चलोतासुकेदेशको ममहिततुमआधीन
३१ ॥ गीतिकाछंद ॥ तिनलियोसांजिहध्यारसबहीसाथमेंकछुधन
लियो । ह्वैअनभेआरुढदोऊगमनतिहिपुरकोकिबो ॥ पडंचेकछुक
दिनराहमेंबसिदेशकरनाटकभले । आयेमहलकेनिकटदोनोंसकल
मनकारजफले ३२ देखेकहाएकटइयुवती कातिकेसुतहिरही ।
तासोकहौहमरहनकारखमांगिवेआयेसही ॥ उनकहौरहियेप्या
रसोअहगेहअपनोजानिये । उतरेतहांकरिचित्तआनंददृढबचनप्र-
मानिये ३३ पुनिकहौहैदीवानकेसुतदृढतवसुतहैकहां । उनकछो
मेरेनांहिकोऊरहतकरिआनंदबहां ॥ पुनिकछोहैमहराजऐसे
कहाभोजनपाइयो । इनकहीपद्मावतीकन्यापालितनसुतछाइयो
३४ ताकेसदनतेमिलतमोकोखानपानसुजानहै । मैजातिवाकेमेह
नितप्रतिकरतिमेरोमानहै ॥ इनकहीजातेसमयमेरीबातकछुसुनि
जाइयो । उनकहीमोसोअवैकहियेसकलताहिसुनाइयो ३५ यह
कहिसुवासोजायकेतूजेठशुदिपंचमिगई । जोलख्योदृपसुतनिकट
सरवरसैनतोसोजाभई ॥ सोकरनपूरणवातअपनीआइयोयादेशमें
येसकलवातेतासुआगे कहीआबसुवेषमें ३६ यहसुनतबुढियावचन
ताकेराजमंदिरजायकै । देखीअकेलीदृपतिकन्यावचनताहिसुना
यकै ॥ बोलीमनोहरपरमवाणीसुनिसुताबुधिवानहै । तेरेमनोरथ
सकलपूरकरेनितभगवानहै ३७ यहकहिकछोजोदृपतिसुतनेसो
कहीसबवातहैसुनिक्रोधकरिकेभरिकैचन्दनदियेताकेहाथहै ॥ यह
ठुरतआईनृपतिसुतपैभेदवासोसबकछो । सुनिभयोमूरखदृपति
सुततबभेदमंचीसबलछो । महराजउननेकहीयासोसोससुभिकैली-
जिये ॥ दशद्योसजेहैंचांदनीकेतिन्हैंवीतनदीजिये ॥ जबव्यतीतेद्योस
दशवेजायपुनिदूतीकहीकेशरभरीपुनितीनअंगुलीगरपैमारीसही
३८ ह्वांसेबडरिसोआबदूतीगईताहिदिखाइयो । नृपसुतभयो
लखिविकलजनमेंभेदमंचीपाइयो ॥ रजसुचितमूरखतीनदिनको
लिखोवानेनामहैवीतेदिवसजबअबधिदूतीगईताकेधामहै ३९ जाइके

उनकुशलपुत्रीक्रोधकियउनबाहिके । परिचमदिशाकेआधद्वारेगई
 याकेकाठिके ॥ इनआरुकोतवन्दपतिसुतसोभेददियससुभायके ।
 सुनिकेविरहकेउदधिवूद्योसुमतिसकलगमायके ४० ॥ तोमरकूंद ॥
 पुनिकहीमंचीवात । ममवचनसुनियेतात ॥ वाहीदिशाकीराह ॥
 तुमकोबुलायोनाह ४१ यहसुनिसजेसवअंग । लियेलायभूषणसंग ॥
 बहसजेअस्त्रवनाय । भयेसुचितअतिसुखपाय ४२ ॥ दोहा ॥ गईनि-
 शायगयामजवनरनारीरहेसोय ॥ पडंचेताहीद्वारपैसुमतिदुहदुख
 धोय ४३ देखैतोवृषकुंवरिसोठाढीदेखतराह ॥ मगनयभीशशिवदनि
 लखिउपजीचितमेंचाह ४४ मंचीसुतठाढोरग्या वृषसुतगयोतिहि
 संग ॥ पकरेकरदुहकरनमें अंगअंगवज्योअनंग ४५ देख्योमहलसो
 जायके अद्भुतवन्द्योसमाज ॥ होययकितमनबदपिकडं निवरेणो
 रतिराज ४६ अपनेअपनेअदवसो खड़ीसखीचडंअोर ॥ अतरसु-
 वासितभमिसवचहलपहलसवठौर ४७ ताहीमंदिरमेंतवै वृषसुत
 दिवोविठाय ॥ पहिरायेहैहारउरचन्दनदियोलगाय ४८ कुंवरि
 आपनेहायसो लागीकरनवयारि ॥ मनडंइन्दिराअमरतजिआ-
 र्देओपसम्हारि ४९ कहीकुंवरकरजोरिके लखितुम्हरोअसभरि ॥
 कोमलकरयावोगनिहिं जियकोजीवनभरि ५० यहसुनिकेदासी
 सकललागीकरनवयारि ॥ दोऊअतिआनंदमेंवैठेतनद्युतिधारि ५१
 रातिदिवसयारीतिते बिलसेभोगविहार ॥ आवनअपनेमिचपैचाहे
 राजकुमार ५२ एकदिवसशोचतउतो मिचसुगुणअवदात ॥ एतेमें
 वृषकीसुता आयकहीयहवात ५३ शोचकहाचितआपकेहियेमेंमो-
 हिंसुनाय ॥ महाराजएकक्षणकमेंसोसबदेडंनयाय ५४ परमचतुर
 रूकमिचमम सोनहिंदेख्योनैन ॥ तातेप्याकुलचित्तहै सुनुप्रियसांचे
 वैन ५५ जाह्णआपवाकेनिकट हैसुखबहुससुभाय ॥ महिमानीताके
 लिये लेजायोसुखपाय ५६ षटससामाविषमिलितदीन्हीसाधपठा
 य ॥ भेज्योवृषकेतनयको अतिहियहर्षवढाय ५७ आवतदेख्योराज
 सुत मंचीअतिसुखपाय ॥ तवहिंप्यारसोतासुकोलीनोकंठलगाय ५८
 वैठेबहुकुशलातके पूछनलागेवैन ॥ सामग्रीदेखीसकल तानेअपनेनैन
 ५९ ॥ मोदककूंद ॥ वृषकीतनयायहतोकहंदीन । बहसुखसोकरि
 प्रीतिनवीन ॥ लखिपाककोतासुनेक्रोधकियो । हमको उहिनेविष
 घोरिदियो ६० उहिनेयहसामासवैपठई ॥ यहप्रीतिवहीहसमा-
 हिंभई ॥ वृषनेकहिकैसेसुजानतहो । रसकोविषक्योसुवखानतहो

६१ इनतामें हते कछु वस्तु उठाव । दई पुनि खानको पास बुलाव ॥ म-
 रगो वहात जवै विपखान । लखि सुखि गये नृपके तव प्रान ६२ ऊ आ
 यह कौन कियो हमकाज । भवे भियके वधमें सुसमाज ॥ तव यों हंसि वा
 तप्रधान कही । उनचिस चही सुभई नसही ६३ ॥ दोहा ॥ नृपवह
 यतन सोकी जिये पुनिति हिमंदि रजाव ॥ बडतने इकीता सुसों क-
 हि वेवात वनाय ६४ शवनकी जियेता सुठि गजवनि द्वावश होय ॥ भूषण
 तामे छोरिके बांधिली जिये सोय ६५ करि चिगुलको चिन्ह पुनि नाम
 जंबके माह ॥ आयो मेरे पास तुम कछो करौ निर्वाह ६६ जाविधि सों
 मंघीत नय नृपको दियो सिखाय ॥ ताही विधिसो जाय उनकी नों कर्म
 वनाय ६७ आयो अपने निचपै सकल कही ससुभाय ॥ वनियोगीका
 भेष दो उवनमें बैठे जाय ६८ आयो नृपको तनय पुनिलगत जहां बाजार ॥
 भूषणरानीके सकल विक्रय करन विचार ६९ स्वर्णकार देखे सकल
 भूषणरानीकेर ॥ ताहि पकरिको तवालापै गयो नकीनी देर ७०
 सवैया ॥ वात कही कोतवा लने तासों कहोनव भूषण कौन तेलीने ।
 जानत नाहिं हौ भेद कछु महाराज गुरु मोहिं बचन दीने ॥ कौन गुरु
 कहें धाम है तासुको भेजिये दूत जो होय प्रवीनो । दूत न जायके योगिहि
 लाय कौत्यों शिरनायके हाजिरकीनो ७१ ॥ सोरठा ॥ पूछत राजा वात
 कही नायसति भावसों ॥ ये मम भूषणतात कैसे करितु मवश किये ७२
 सुनहुं बचन महाराज गुणपक्ष चौदसि गई ॥ डाकिनि मंच सुसाज, बोली
 ताकिनिकटमें ७३ भूषणसकल उतारि वामजंघमें चिन्ह करि ॥ करि
 चिगुल अनुहारि पठई ताके वासको ७४ ॥ दोहा ॥ यह सुनिके मह-
 राजतव अपने मंदि रजाव ॥ कही सकल नृपवासी रानीको समु-
 भाय ७५ देख्यो रानी जायके चिन्ह सुताकी देह ॥ कही नृपति सों
 सब लखी बडरि कियो मनतेह ७६ कछो नृपति सों आयके सत्व आप
 केवै ॥ लख्यो चिन्हतिरगुलको सुता जंघमें नैन ७७ सुनि आयो दरवा
 र नृप योगिहि कियो प्रणाम ॥ कही यत्न कहता सुको होय पिशाचिन
 धाम ७८ महाराज वहनीतिमें कछो वचन सुभिलेहु ॥ गुरुपरि उत
 कविमिच अरु वैद्यखनन समएहु ७९ होइकोऊ कुल आपने समुक्ति
 आपचितलेइ ॥ कछु उपाय नहिं तासुको देखनि कारो देइ ८० नृप
 मूरखस सुभौनही इनको कपट अचार ॥ तोरिनेह अपनी सुता दीनी
 नयनिकार ८१ ॥ तोमर छंद ॥ तवराजको समुभाय । कही नीति वि-
 विधि वनाय ॥ पुरगये वनमें गूढ़ ॥ अश्वपै अरु ८२ संग लई नृपकी

बाल । धरिअश्वपरततकाल ॥ पडंभेसोअपनेदेश । अतिक्रियोनि-
र्मलभेष ८३ अपनेमहलमेंजाय । बैठेसुचितथलपाय ॥ यहसुनीसबने
बात । आयोद्वपतिकोतात ८४ घरमेंभयोआनन्द । ज्योकुसुददेखै
चंद ॥ ल्योद्वपतिअतिहर्षाय । सुतकोलिबोउरलाय ८५ लखिवध
अतिसुखकीन । बडदानविप्रनदीन ॥ बाजीहैदुंदुभिहार । कीन्हो
द्वपतिदरवार ८६ ॥ दोहा ॥ इतनोकहिवैतालने प्रत्रक्रियोसुख
पाय ॥ विक्रमइनमेंकौनको भयोपापसरसाय ८७ कहीद्वपतिने
राजको पापभयोअतिभूरि ॥ कैसेसुनिवैतालने प्रत्रक्रियोभरिपरि
८८ ॥ हरिगीतिकाछंद ॥ दीवानसुतनेकाजअपनेमिचकोचितहै
क्रियो । कोतवालचाकरजानिआपकोद्वपतिउरउरपोहियो ॥ सु-
ताताहीराजकीन्हैकामकोआनंदलियो । विनाससुभेमदराजा
काढिताकोवनदियो ८९ ॥ दोहा ॥ याहीतेवाराजको पापभयो
वैताल ॥ सुनिकैताहीदृष्टमै जायचओततकाल ॥ ९० ॥



दूसरी कहानी ॥

दोहा ॥ चख्योद्वपतिकेसंगपुनि हियमेंअतिसुखपाय ॥ कही
कहानीदूसरी राजाकोससुभाय १ धर्मस्थलइकनगरहैनामजानि
द्वपलेड्ड ॥ राज्यगुणाधिपद्वपकरे संयुतनीतिसनेड्ड २ ॥ मोतीदाम
छंद ॥ तहँकेशवनामवसेद्विजराज । करेअपसंयमनिससुकाज ॥ सुता
द्विजकेघरणकललाम । मधुमावतितासुकोटेरतनाम ३ भईवरयोग
जवैवहवाल । भयोद्विजशोचमहाततकाल ॥ गयोद्विजसोयजमानके
गेह । हियेमधिपालिकेतासुसनेह ४ गयोद्विजकोसुतऔरहियामा
गुरुकेगृहमेंपढिवेमतिधाम ॥ पुनिताद्विजकेइकवालकआय । दियो
तहँदर्शनचित्तकोचाय ५ कहीद्विजकीपत्नीयहबात । हमदेहिंसुता
अपनीतोहिंतात ॥ इनतोयहबातकहीसुकही । द्विजमेंपुनिऔर
हियेमेंचही ६ लख्योइकवालकरूपउदार । मनोभुवमेंप्रगद्योवर
मार ॥ कहीयहतासोहियेमधिचाहि । सुताअपनीतोहिंदेइंगेव्या-
हि७ पढिवेकहँजोद्विजपुचगयो । तहांचननेलखिवालतयो ॥ अपनी
भगिनीहमहँ कहंदेहि । तिहँपुरमेंयशकोलहिलेहि ८ कहुनीति

गयेलखिवासरत्नों । सुलियोसंगवालदुङ्गकरत्नों । द्विजश्रीद्विजको
सुतआयगयो । सगरगृहमेंसुखछायगयो ९ पहिलोइकवाल-
कवैठोजहां । पुनिहैद्विजकेसुतआयेतहां ॥ लखितीनिकोदेखि
अदेशभयो । विधिनेयहकैसोकुयोगठयो १० पहिलोसोचिनि-
क्रमनामगयो । पुनिदूसरोवामननामभयो ॥ मधुसूदनतीसरो
जानउचित । सबहीगुणमेंसममानउंमिस ११ ॥ दोहा ॥ चित्तमें
चित्ताकरतद्विज कियोकौनमैकाष ॥ इककन्यावरतीनियेकैसेरहि
हैलाज १२ ऐसेशोचतद्विजउतो कहकीजैचितचाहि ॥ कन्याताकी
सर्पने उसीसुतिहिस्यमाहि १३ कियोयत्नतानेवउत गाडुरितुरत
बुलाय ॥ मेठीकापैजातहै जोविधिदईरचाय १४ काटतइतनेनषतमें
इतनेअंगनबीच ॥ उत्तरतविषकवहूँनहीं जोअमतकोउसीच १५
कहततासुकोभेदसब सुनउगुणीजनवैन ॥ पंचमीषठीअष्टमीनवमी
चौदसिएन १६ शनिमंगलहैवारयेअौरनषतसुनिलेउ ॥ रोहिणी
शुभिकामलअरु मधाविशाषाएउ १७ श्लेषाइननषतमें जोकउ
काटेसर्प ॥ करीयत्नकोटिकतज नहिउतरतिहिदर्प १८ इंद्रीअधर
कपोलअरु कोखिनाभिवरग्रीव ॥ काटेफणिरुनअंगजो जानोदुख
कीसीव १९ उठिउठिअपनेगेहको गयेसकलगुणवान ॥ करीक्रिया
द्विजसुताकीवउतहियेदुखकान २० गेहगयोजवविप्रवर शोकमगन
है चित्त ॥ इनतीनोंतहंआयकै यत्नकियोसुनिमित्त २१ एकअस्थि
कोवांधिद्विज योगीभवोतेहिवार ॥ दूजोरजकोवांधिकैरह्योतहां
मनमार २२ तीजोगयोविदेशरभिपउं च्योकाहूँदेश ॥ गयोक्षुधित
है विप्रगृहअतिहीमैलेभेअ २३ जानिअतिधितवविप्रवरलीन्होपा-
सविठाय ॥ पत्नीताहीविप्रकीलाईभोजनचाय २४ कहुकरअोपर
देशमें इतनेअवसरबीच ॥ मधुसूयोद्विजकोसुततहांउधरयोताकीमी
च २५ जननीनेकरिक्रोधसुतदियोअग्निमेंडारि ॥ लखियोगीउठ
केचक्योकीन्हेंविनाअहार २६ पकरोद्विजनेधायकेक्योंनहिंभोजन
कीन ॥ कहयोगीतेरीचियाडारिआगिसुतदीन २७ होतराअसी
कर्मजहैं तहांनबैठजाय ॥ यहसुनिजपिकहुमंचउन लीन्होंपुच
जिवावर २८ ॥ तोमरछंद ॥ यहलख्योकर्मअभूत । द्विजराजकीकरत-
त ॥ कीन्होंवतीसुविचार । लीजैसोपुस्तकचार २९ यातेनिकारों
मंच । यामध्यसवरेतंच ॥ याकोचलोलेसाच । बहघारिचितगुणगाय
३० जमतरेखिगोनिजधाम । निमित्तकेगयेयगवाम ॥ जवगयेसगरेसोय।

योगीश्वरोदुखधोय ३१ यहचोरिपुस्तकलीन । तहंतेबखोसोप्र-
 वीन ॥ कितनेकदिवसपिताय । सबभमिपडं च्योआय ३२ दोऊलखे
 द्विजराय । उठिमिलेचितकेषाय ॥ पंछीसुवातपविच । कछुपढीवि-
 द्यामिच ३३ ॥ दोहा ॥ संजीवनिविद्यापढी सुनोमिचचितलाय ॥
 पढीसुतौद्विजकीसुता दीजैक्योनजिवाय ३४ अस्थिसुरजकोटेर
 करि कादिमंचनपिबीर ॥ सुसुखिसुखोचनिजीउठी चेतनलख्योअ-
 रीर ३५ ताकेलखिकेरूपवे भवेकामआधीन ॥ आपुसमेभगरनसगे
 वेईद्विजसुततीन ३६ कहिवैतालबोखोवऊरि सुसुविक्रममहराज ॥
 भईवामवहकौनकीलोकनकोशिरताय ३७ प्रतिउत्तरविक्रमदिवो
 सुसुवैतालवरवीर ॥ मढीछायजोद्विजरछो ताकीनारिसुधीर ३८
 पुनिबोख्योवैतालवह सुनोअपतिपरवीन ॥ जोनराखतोअस्थि
 द्विज तोकछुवतरहीन ३९ जोविद्यामहिंसीखतो वहद्विजचितके
 षाय ॥ तोवहकैसेजीवती कहौमोहिंसमुभाय ४० जानेराखेंअस्थि
 ठिगसोताकोषैपुच ॥ जीवदानजानेदिवो सोईपितापविच ४१
 वाकारखताकीभई पत्नीसोईवाम ॥ दृखलतावैतालपुनि लटकत
 भयोसकाम ४२ बडरिवांधिवैतालकोलीन्होअपनेषाय ॥ कहत
 कहानीतीसरीसुनिलीजैअपनाय ४३ ॥

तीसरी कहानी ॥

गीतिकाछंद ॥ वैतालबोखोसुनोराजावातरकसुनिलीजिबोवर्दवा
 नसुदेगसुन्दरसुनतवैवपतीजिये ॥ तहंरूपसेनअनूपभूपतिराजतहंकी
 करतुहै । नीतिकोअवतारजानो दीनकेदुखहरतुहें १ ॥ अवंमछन्द ॥
 ताकीयोढीमारिगोरकछुहैरछो । तरतबोखिदरवानअपतिनेबो
 कछो ॥ कहोसत्यसववातहारकाहभीरहै । देखिकहोसमुभायसुमति
 वरवीरहै २ महाराजसुसुवचनवैदनहिंआवहीं । वनदहारपरआव
 विसवऊपावहीं ॥ तिनहींकोअहगोरगबोसमुभायकोसुनिराजाचुप
 चापरहोशिरनाथको ३ दक्षिणदिगतिअरवीरवरआइयो । सकल
 सुनेहथियारसुवचनसुनाइयो ॥ राजहारमैआवतासुनेबोकाही ।
 सबरिकरोजहंराजवाकरीहमचही ४ द्वारपालत्वोआप्रराअससु
 हावके । आयोइहांएकअरघायतुमपाइके ॥ कहोरामबहंलाउं
 तरतसोआइयो । राजाकोशिरनाथसुवैठकपाइयो ५ राजापूछे

अररोजकहलेङ्गने । कहीमोहिंसमुभाबसोउत्तरदेङ्गने॥बोल्बोतव
 हीवीरवपतिसुनिलीजिये । तोलेस्वर्णसहस्रनिसमोहिंदीजिये ६
 राजापुछीसंगकितोपरिवारहै । कहेसंगमेंपुचसोखीसायहै ॥ एक
 पधिकोऔरसुनोवपनायहै ७ यहसुनिकोसवसभाहँसीसुखकेरके ।
 मांगबोइबधनवज्रतकस्योक्कहहेरिक्के ॥ कीनोविसविचारकामकह
 आइहै । पोतिसुमंभीवातकहीसमुभायहै ८ तोलेस्वर्णसहस्रनिस
 बहिंदीजिये । हीओवाहीरीतिनकमतीकीजियो ॥ मिलनखग्यो
 तिहिमित्सुसौनेहायमें । आधोकीनोदानरख्योनहिंसायमें ९
 आधेमेंसेअर्धसुगोनिनकोदियो । नित्यखरचकेकाजकहुकनिजकर
 तियो ॥ बाहीरीतिसुजानकरतुसोसवरहै । रक्षापलगसुनिसरेअह
 मेंवहै १० जबहीनिशिकोजायपलंगपैसोवतो । जागिपरैजोकह्वीर
 वरजोवतो ॥ रहेजोसदासुचेतसोस्वामीसेवमें । औरनहीकहुकाज
 करेवहभेवमें ११ ॥ दोहा ॥ कोईजोविक्रयकरै वस्तुसुधनकोहेत ॥
 सदाचकरियाआपवो तनविक्रयकरिदेत १२ ॥ लवंगछन्द ॥ बाही
 तेजोचतुरकहैयहवातहै । सेवावातैकठिनधर्मअवदातहै ॥ एकदिना
 कीवातनिशायोहीगई । मरघटनेआवाजआवतीएकनई १३ राजा
 कहापुकारि वीरवरहैकहा । इकेउत्तरदियो टेरिकैहौं इहां ॥
 देखोतुमह्मांजावकीनवहरोवई । आरतकरतपुकारनीदकोखोवई
 १४ गयोवीरवरतहांजहांवहनारिहै । ताकेपीछेवपतिगयोसुविचा
 रिहै ॥ देखीतानेजायतहांएकसुंदरी । पहिरेभुषणलखेचन्दद्युतिमं
 दरी १५ पूछीतासोवीरकहोखोरोवती । शावककोसेनैतितहै
 जलधोवती ॥ कहीतासुनेवातवीरसुनिलीजिये । राजलक्ष्मीमोहिं
 आपगनिलीजिये १६ कहीवीरवरवातसोकारखकहुसबै । सत्व
 कहीसववातसुपुछतहौंअगै ॥ राजाकरतअनीतिविपतितहँआइहै
 मैंनहिंताकेरहँकहीसमुभायहै १७ एकमासकेजातवपतिदुखपाव
 है । ताहीदुखमेंपागिनिपटपरिजावहै ॥ ताहीकारणपायवहांमें
 रोवती । ताकीकरिकेयादनयनदुखधोवती १८ कहीवीरवरवात
 वलकहुतासुको । राजासुखसोरहेसहितरनिवासुको ॥ बोलीपूरव
 ओरसोदेवीपानहै । ताकोतुनिजपुचदेइधिरदानहै १९ राजाजिने
 यतवर्षसुकुसोगेहमें । यहसुनिकोगृहगयोसत्वकरिनेहमें ॥ राजा
 तेहीसंगचक्रोगृहआइयो । लखिनेकोतिहिधीरवीरसँगघाइयो २०
 तिननिजनामजगायकहीवहवातहै । तूनिजसुतकोमोहिंदेरकरि

घात है ॥ थाकेशिरकेदियेराजवचिजायगो । रहेहमारोधर्मअधर्मन-
 शायगो २१ यहसुनिकेसुतकहीधर्मकीरीतिहै । होवतुम्हारो
 कामटरेसबभीतिहै ॥ कहीबीरवरवातवज्जरिनिजवामसों । होय
 सुखितसोदेवसरेसो कामसों २२ पुनिकेलीतिहिबामसुनज्जप्रिय
 प्रानहै । मेरेतागतितुहीसत्ययहवानहै ॥ कहीपुचसुतुजनकदेहकि-
 हिकामकी । करियेस्वामीकाजसुगतिपरमानकी २३ ऐसैकहते
 गयेभवानीगेहके ॥ करिकेपूजादेविकाओकरिनेहको ॥ नृपतिजिये
 शतवर्षमनावज्जईशमे । यहकरिकेयकखुददियोसुतशीघमें २४ देखि
 आतकोघातभगिनिताकीमरी । मारीवामवरवीरदेरनहिंकहुकरी
 ॥ लखयोबीरवरमैनमरगोपरिवारहै । कहादुख्यलैकरोकियोजोवि-
 चारहै २५ यहकहिकेनिजशीघकाटिवोतासमें । राजाकियोविचार
 उचितयहनाहिमै ॥ मरोहमारोकाजसकलपरिवारहैतातेनृपतिने
 मरणविचारगोसारहै २६ त्योहीनृपनेखहुलियोकरसायहै । पकरगो
 देवीआपनृपतिकोहायहै ॥ कहीपुचवरमांगकियोसाहसभले । मां-
 ग्योनृपवरसकलजियेसमसंगबलै २७ कहीभवानीसकलप्राणवेपाव
 है । अमतलैतिहिवेरदियोसुजिवायहै ॥ जयजयकरिसबउठेलओनृप
 चैनहै । वज्जरिदेविसोंराजकहेयेवैनहै २८ हीनहोआधोराजराज
 वरवीरको । जानिसाहसीशूरवीरस्थधीरको ॥ त्योपूछीवैतालनृ-
 पतिकोहरिकै । इनमेंकोसतवानकहोसबटेरिकै २९ ॥ दोहा ॥
 कहीवातविक्रमसुमति सुनज्जवीरवैताल ॥ राजाकोसतअधिकहै
 मरतुहतोतिहिकाल ३० कहीवातवैतालनेकैसेभयोनवेश ॥ टया
 प्राणचारोंदिये कहियेवचनसुवेश ३१ सेवककोयहधर्महैकरैराज
 कोकाज ॥ ताहीकोथशबदतहै रहेजगतमेंलाज ३२ राजानेसेवकलिये
 देनचओनिजजीव ॥ ताहीतेसतअधिकभो सुनोसुमतिकेसीव ३३ ॥

चौथी कहानी ॥

दोहा ॥ बाणीउदधिबैतालकी विक्रमसमरजनीश ॥ बढततोय
 संभवद्विवर सुमतिसुविश्वेबीश १ भोगवतीनगरीप्रगट सुनुविक्रम
 भूपाल ॥ रूपसेनराजातहां परमउदारदयाल २ ताडिगशुकइक
 अतिचतुरराजपूछियोतास ॥ तूजानतकहवार्ता मोसोंकरस
 प्रकाश ३ ॥ चौपाई ॥ सुनोराजममउत्तसवाणी । सहितसभासद

जेतिकप्राची ॥ मगधनामइकमुंदरदेशा । मगधेश्वरतइवसतनरेशा ४
 चन्द्रावतीतासुकुन्धावर । सोतुहिबरेससुभ्रअपनेउर ॥ सुनीचपति
 जवशुककरवानी । बोलिलियेपण्डितमुनिज्ञानी ५ बाल्योचपति
 द्विजनसोवैना । शोचिसमुभ्रिसवकहिबेणेना ॥ मोरविवाहकौनसँग
 हाई । सोसमुभ्रायकहाद्विजसोई ६ कहेसकलद्विजसुनचपएहा ।
 चन्द्रावतिसुनहोवसनेहा ॥ सुनेद्विजनकेऐसेवैना । प्रफुलितभवेच-
 पतिकेनेना ७ बोलिलिवोद्विजचपतितासुछिन । समुभ्रायोतिहि
 शुभगवचनगिन ॥ मगधदेशकोदिवोपठाव । प्रीतिप्रतीतिरीति
 समुभ्रायदरूपसेनकीसुताअनपा । तिहिदिगरेहसारिकाचरूपा ८
 मदनमंजरीनामसुहावा । चपतनयाकरसंगतिहिपावा ९ जैसेचप
 नेशुकसनकही । सोईचपकम्बाचितचही ॥ सुनहुंसारिकावचन
 हमारा । ममअशुचरूपकोचपतिउदारा १० सुनुचपसुताकहहुंवर
 वानी । भोगवतीनगरीसुसुदानी ॥ रूपसेनराजातइचाही । तो
 विवाहसँगहोवसोताही ११ बहसुनिचुपहुरहीकुमारी । अनदखे
 ममकियेविचारी ॥ पङ्कज्याद्विजताराजादेश । अतिभुंदरवरनिर्मल
 भंश १२ कहेउसँदेशरा । सुनजाई । सुनिचपमातहुंइवहरपाई ॥
 तासुसंगनिजविप्रपठावा । मंगलसामागांठिबधावा १३ कहवचपति
 सनविपतिहमारी । तुमसवभांतिचतुसुविचारी ॥ बहिविधिदोउ
 द्विजसंगपठावे । कहुकदिवसवीतेगृहचाये १४ अशुचपतिसनकह
 इतिहासा । सुनिप्रफुलितसवभवेअवासा ॥ सजिचतुरंगिसेनसु-
 चदाई । म्हाइनबलेउनिशानवजाई १५ ॥ दोहा ॥ दिवसकहुक
 वीतेचपति पङ्कज्योताकेदेश ॥ करिविवाहकौवामसँग निजगृहबले-
 उनरेश १६ ॥ सोगठा ॥ चलतसमचपवाम मदनमंजरीसारिका ॥
 सँगलीन्हीअभिराम मानिबालपनप्रीतिको १७ ॥ चौपाई ॥ कहुक
 दिवसमारगहिविताई । चपसुदेशमहँपङ्कज्याई ॥ रहनलगेउमं-
 हिरवरवासा । सुखदचहुंदिशिपुष्पसुपासा १८ एकदिवसकरयह
 इतिहासा । शुकसारिकाधरेचपपासा ॥ कहतप्रियाप्रीतमवहवा-
 ता । देखहुइनकरनामविधाता १९ रहतजुहेपिंजरादोउबीवा ।
 करनम्हाइइनकरमतिसीवा ॥ सुनिचपपिंजरावडोमंगाई । शुकसा-
 रिकादिवरेखवाई २० कहुकदिवसवीतेइहिभांती । चपप्रतिलखी
 रानिवतराती ॥ कहशुकसुनहुंसारिकावानी । कामविवशजगजे-
 तिकनीप्रा २१ जेहिजगतनपरिविषयनकीना । निवउमूढजिमि

जलविनमीना ॥ यातेमोसंगरमिप्रियनारी । तूअतिमोहिंप्राणभ
 तेप्यारी २२ सुनिअसवचनसारिकाकही । मोहिंपुरुषकरवाह
 नरही ॥ कहशुककवनपापनरकीना । ज.तेअसप्रणचितधरिती-
 ना २३ ॥ दोहा ॥ मैनाकहपापीपुरुष दगावाजमतिमूढ । तातेमै
 दियछाडिकै रहनकामआरूढ २४ ॥ सोरठा ॥ कहशुकसुनजुं सुधात
 नारीअधमसुपापिनी ॥ परपतिरतिदिनराति निकरकुकर्मणिपा
 सते २५ ॥ चौपाई ॥ अबयहिभांतिबचनदोउकहेऊ । दोउनिगमति
 करिपारनलहेऊ ॥ तबवृषकहेउसुनौममवामी । केहिकारणदोउ
 अगडतप्रानी २६ कहसारिकासुनजुं वृषवाता । पुरुषकरतनित
 त्रियकरधाता ॥ मैयककथाकजुं सुनिलीजै । बचनसुधाममयवणन
 पीजै २७ ईलापुरदूकनगरसुहावा । तेहिपुरबसिदूकधनिकवनावा ॥
 सन्ततिहोवनताकेगेहा । तातेहरिपदकरेउसमेहा २८ तीरय
 नेमवजुतव्रतसाधा । जातेहोयनसंततिवाधा ॥ सेवतहरिपददिन
 बडगयऊ । गर्भतासुरानीकेभयऊ २९ जनमेताभुगेहसुन्दरसुत ।
 दानशाहदीनेहेअतिअद्भुत ॥ ग्रामअनेकसुविप्रनदीने । करिकैविनय
 सुपूरणकीने ३० ॥ दोहा ॥ पांचवर्षकोसुतभयो बणिकहृदयसो
 विचारि ॥ पढ़नहेतुचटसारपै दीनोंताहिविठारि ३१ ॥ सोरठा ॥
 सोअभागमतिमन्द विप्रनीकआयेनहीं ॥ करिपितुसोखलछन्द
 जायजुआंखेलैकुमति ३२ ॥ चौपाई ॥ गयउश.हपुनिअमरसुलोऊ ।
 भयउतासुगृहअतिबडशोऊ ॥ तासुतकीअससुनजुंकहानी । भयउ
 अइच्छितकारजजानी ३३ खेलैजुआंरहेबेझ्याबर । सुनजुंतासुकर
 लक्षणवृषवर ॥ धनकररहितभयउसोबालक । भयउबसितमहाकुल
 बालक ३४ अन्यदेशकहंकीनपयाना । जायचन्द्रपुरकेनियराना ॥
 सेवगुप्ततहंबणिकसुरहई । जायतासुगृहअसवचकहई ३५ जाय
 पिताकरलीनेउनामा । सुनिउठिमिलेउशाहसुखधामा ॥ पूछत
 आवनभोकेहिहेतू । कहतबणिकसुतकपटसहेतू ३६ गयोबणिकको
 जेअनाहा । आयजहाजसिन्धुकमाहा ॥ तहाबिगकरिबलीबयारी ।
 उवजहाजभईममबारी ३७ बचेउमहाकरिकएउपाई । विधिगति
 प्रबलकहीनहिंजाई ॥ काविधिनगरआपनेजाऊ । जायकहामुख
 उजहिंदिखाऊ ३८ यहसुनिसाहशोचिमनमाहीं । हरपिहिंये
 प्रभुगहीसुवाहीं ॥ ममगृहकन्यादीजैयाही । जोकुछबनेसमय
 निरवाही ३९ ॥ दोहा ॥ ऐसेदृढतवांधिकै गयोवामकोपास ॥

कछुओसकेलटतामसो जोकिबमनविष्वास ४० रानीकोसमुभाय
 कै लीजेविप्रबलाय ॥ सामग्रीमंगवायकै दियोविवाहकराय ४१
 जबविवाहयाकोभयो रहनलग्योयाठौर ॥ बड्ढरिबसिकनेतासुको
 गेहपतायोघौर ४२ कछुकदिवसभीतेकहे निजतियसोयेबैन ॥ देखै
 अपनेदेशको बड्ढदिनवसेसुखेन ४३ ॥ कइदसौपाई ॥ बड्ढतदिवसयहबसे
 बड्ढतसुखहमनेपायो । देखोअपनीदेशयहीमनविभ्रमछायो ॥ जाय
 सिखायाशाहविदातवतानेकीनी । ड्रव्यदर्दकइलापसंगदासीकरि
 दीनी ४४ ॥ दोहा ॥ जबैरूपतिनेतासुकै विदाकियोसुखपाय ॥
 कछुकदूरयेगावकै नोख्योयोचितचाय ४५ ॥ मोतीदामकन्द ॥ अहो
 रूपतितनयासुखदाया कहोइकयातसुनोचितलाय ॥ बड्ढोडरहैवनके
 जगमें । कछुहोवनहँसभरेजगमें ४६ इहतेगहनोसबदीजिय
 मोहिं । कछुभुविवाततेवारतातोहिं ॥ दियेगहनेतेहिंताहिउतादि
 जलीसंगतासुकैपंयनिहारि ४७ ॥ दोहा ॥ दासीकोतिनमारिकै
 वामरूपमेंडारि । बख्योगयोनिजदेशको कीने हर्षअपार ४८ तिहि
 मारगआयापथिकहुःखसुनीआवाज । कहनलग्योवनमेंकोऊफस्यो
 कासके साज ४९ बहविचारिकैपथिकवह गयो रूपकेपास । काठिता
 सुनेकामिनी कीनीबचनप्रकास ५० कहोबालकीनेदियो हुम्है
 रूपमेंडारि । कहानामहेतातहुव कहोसत्यनिरधारि ५१ हे सगुप्त
 कीपुत्रिका चोरनलोन्हीवेरि । दासीहनिभषणखयेम्बहिंगयो रूप
 मेंडारि ५२ योबटोहीसाबलैपहंचायोतिहिगेह । निरखतहीपितु
 मातुकेउरमेंउपजानेह ५३ कहीकथावनकीसकलकछुकदुरायोभेष ।
 भलीभईदुखनशिगयोकीन्हीदुपामहेष ५४ बड्ढतभांतिघोरजदियो
 कहीपुत्रिकाबाल । मिलिहैपतितेरो बड्ढरि जियजिनहोयविहा-
 ल ५५ ॥ पहतिछंद ॥ यहसाधपुचनिजगेहजाव । खेलनलाग्योनित
 नुंसेवाय ॥ नितकरतवेगमनकर्मकर । रहोपापतासुकेदेहपूर ५६ ॥
 मोदकछंद ॥ इहिभांतिकछूदिन वीतिगये । तिहिदेशमेंदुःखअनेक
 छये ॥ तिहिपासतेदौलतिजातिरही ॥ मनमें निश्चै य रीति
 बही ५७ ससुरारिकोबेग बख्योचहिये । तिनसो अकबापकै यो
 कहिये ॥ यहठानिहिये तिहिदेशगयो । वहिआवततियनेता-
 किलयो ५८ ॥ दोहा ॥ कहीसासुहेचावकै मतिडरपोनिजचि-
 न । कहिबोचोरननेसकल हरोहमारोबिस ५९ दासी डारी
 मारिकै रूपहिपत्नीडारि । मोहिंसंगअपनेलयो दीनेदुःखअपार

६० यह कहिके वह होंर हो नितप्रतिभोगैभोग । एकदिवसकी
 बात यह सुनी देवके भोग ६१ भूषणसाजे सकलतन मगनवनी बस
 बाल । आईपतिके निकट वह धारैरूपरसात् ६२ शर्वनकियोपति
 के निकट गई निशायुगयाम । तिहि मतिमंदगंवारने हनीआपनी
 वाम ६३ ताहिमारिभूषण सकल लेकरि गयोसदेश । यह कहि
 के मयना कहन लागी वचनविशेष ६४ पुरुषजातिऐसीकठिन सु-
 सुखसकलभवपाल । निजनवनन देख्योसकल जोकहुकरैइवाल ॥
 ६५ ॥ गीतिकाछंद ॥ यह वचन सुनि केवपतिने पुनिकीरसोऐसेकही
 कहितोकथावर आपनी सोजाहिबेमधिवसिरही ॥ महाराज सुनिबे
 देशकंचनपुरसुनामबखानिवे । तिहिमध्य सुसामरदत्तधनपतिच
 तुरबुद्धिप्रमानिये ६६ ॥ तोमरछंद ॥ ताकोसुशोतथीदत्त । शुभगुणव
 में संयुक्त ॥ पुनिनगरकंचनमहि । इकसेठघोरसुबुद्धि ६७ ताके
 जयथीनाम । कन्यासरूप ललाम ॥ श्रीदत्तकोसोचाहि । दी
 न्हो वखिकनेव्याहि ६८ सोगबोकुंवरविदेश । करिके वखिक
 कोमेश ॥ यहभईतरुणसुवाल । सबभईकामसुहाल ६९ पुनिस-
 खीताकेएकसो चतुरमतिसविभेक ॥ तासोंकहीउगवात । बस
 योहीबीतीजात ७० यह कहिघटारीमांभ । सोगदलखिके
 सांभ ॥ तिनलख्योपुरुषअनप । जनुकाम कोहरूप ७१ बोली
 सखीसोवैन । यापुरुषकोलेखिनैन ॥ यासोंवचनयेभाषि । पुनि
 गेहआनैराखि ७२ ॥ दोहा ॥ योंकहिवाहीपुरुषकोपठबो
 सखिकेगेह ॥ आपुसुचितहुइदेहते आईकरिकेनेह ७३ परम
 प्रीतिसेदुखनने करपरस्परभोग । बीतेवहुदिननेहमें करतसुखद
 संभोग ७४ ताकोपतिआयोतहां करिकेवहुव्योपार । निरखतही
 भतीरकोकीन्होंकोपअपार ७५ गईजवैपतिके निकट जबथी
 सहितसकोप ॥ जायनिकटहैमलिनसुख रहीमानकोरोप ७६ सो
 आबोपरदेशते अमितहतोसवगात ॥ सोथोअतिआनन्दमें कहीन
 तासोंबात ७७ यानेजानीनींदमें गयोअमितवहसोब ॥ बलीमिषके
 गेहकोचिततेदुविधाखोय ७८ मिल्योराहमेंघोरतिहिगबोतासु
 केसंग ॥ ताकोमिषसहेटमेंडसिकरलियोभुजंग ७९ ईजानीबहनींदमें
 मिलीतासुसोधाव ॥ लिपटगईआनन्दमें अपनेचितकेबाव ८० दे-
 खतताकेचरितकोवाव्योएकपिशाच ॥ सोजवभभोमैनकेदुरीविरह
 कीआव ८१ पैयोताकीदेहमें मृतकपरजोबीर ॥ करितासों

क्रीडाप्रमित काटीनाकसधीर ८२ अतवधिरसखिपैगई तासो
 कहासुनाय ॥ कहाकहाअवकीजिये कहाकहोसमुफः व ८३ जीलौ
 जापतिनेनिकट उवेनसुरजहोव ॥ अतिविह्वलहूँ सवनमे कहियो
 सेसेरोव ८४ ॥ गीतिकाछंद ॥ अतिकरि कुलाहलरायके तिनदीन
 वचनसुनावके । मातापिताकेसासुह तिनकहीऐसेजावके ॥ काटी
 हमारीनाकपतिने कहोकहाअवकीजिये । बुलवावप्यादेराजके अ
 दबवाकोदीजिये ८५ ॥ पदतिका छन्द ॥ यहिभांतिअनेकनकरि
 उपाय । तिहिनखिकलियेप्य देवुल व ॥ ताकापठायदिवराजपास।
 मिटिगईतासुकोजीवयास ८६ ॥ दोहा ॥ पूछीवपतावणिकसो
 कौनकियाठमकर्म ॥ धर्ममार्गकोछ । हिसुख कैसेकियाअधर्म ॥ दि-
 बोनप्रतिउत्तरवपहि उकुमकिय । महिपाल ॥ यहासेवहिलेजावके
 थलीहिवोउताल ८७ आजापावनरेषकी संगबलेलैतास ॥ दई
 दुहाईबोरनेकीनेवचनप्रकास ८८ वखिकपुनकोदोषनहिं मैनिज
 दीखजायेन ॥ सुतायाहकीदोषवुत गईआरकेऐन ८९ ॥ तोमर
 छंद ॥ सोजारमतकसमान । हरेआअपनेयाव ॥ तिहिकरीनाथा
 भंग । मैलखयोसकलकुठंग ९० येसुनतनरपतिवैन । पठबोसोदूतसुखे
 न ॥ नाशासईमंगवाव । हिवसकलससभोन्वाव ९१ कहबोरवात
 वनाव । सुनिवेवपतिचितलाय ॥ जोकरेखोट । कर्म । तिहिनतवह
 वपधर्म ९२ बोकहीशुकनेवात । सुनिवपतिवडतसिहात ॥ ऐसी
 कुकर्मनिनारि । लिखिलेउचितविचारि ९३ जोकरेदुष्टप्रसंग । सो
 लखउमतिकोभंग ॥ सोलहतहेवडदुःख । नशिजातसवरसेसुःख ९४ ता
 नामकोवहहाल । बोकियोहेभुवपाल ॥ तिहिछौरकर्मकराव । सर
 हटिहियापडाव ९५ फेरोनगरकेमहि । किवसकलकारजसिद्धि ॥
 वपपुनकोदेवान । किवबोरकोसनमान ९६ ॥ दोहा ॥ पूछीपुनि
 वैतालने विक्रमसोबहवात ॥ अधिकपापकाकोभव । कहासुमति
 अवदात ९७ कहविक्रमनरपालतभवोवामकोपाप ॥ रहतपदव
 कोधर्मउर विवउगपापनताप ९८ चण्णोजावकेसिरसतव वही
 रीतिवैताल ॥ ताहिवांधिकेवपतिपुनिबलतभवोउताल ९९ ॥



पाँचवीं कहानी ॥

दोहा ॥ कहवैतालराजासुनउ कहतकावासुहुवेन ॥ करवज्ञान

दुखकोहरण जियसुखकरनसुखैव १ ॥ मधुभार ॥ सुनियेनरेश । मम
 वचनवेश ॥ करिहर्षचित्त । यहमानिमित्त २ ॥ तोमरछन्द ॥ उज्जैन
 नगरीनाम । तहंनृपमहाबलधास ॥ सोकरैतहंकोवास । तिहिदूत
 दूकहरिदास ३ ॥ गीतिकाछन्द ॥ तादूतकेएकसुतासुंदर परमगु-
 ष्णनिउजागरी । अबभईव्याहनयोगसाई मातुपितुचिन्ताकरी ॥
 सोकहैकन्यामातुपितुसों तातधहसुबिलीजिबे । जोजानविद्यावेद
 विधिसोंतातमोंहित्यहिदीजिये ४ राजापठायोदूतदक्षिणपासदप
 हरिचन्द्रके । लायोकुशलतुमजायह्वाकी नशेसबदुखहृन्दके ॥ पङ्क-
 च्योदृपतिकेपाससोबर भूपजायपठादयो । सोरछा । ह्वांहीदृपतिके
 ठिग अधिकचितसुखपादयो ५ ॥ दोहा ॥ तवपछीदृपनेसुनोवात
 एकहरिदास ॥ सत्यकहोमोसोंसुमति कलियुगकोकहंवास ६ कहे
 वचन हरिदासने सुनियेवचनवरेश ॥ व्यापिरह्योकलिकालजग
 पुण्यरह्योनहिलेश ७ कहतवचनसुखपरमधुर हियमेराखतइस ॥
 पृच्छीफलनहिंदेतहै करतअधर्मनरेश ८ यहसुनिदृपमहलहिगयो
 यहवैठोनिजथान ॥ इतनेमेंकविप्रसुतआयोमांगनदान ९ कंही
 विप्रकहवाहिये करियेवचनप्रकाश ॥ तानेकन्यातासुकी मांगीस-
 हितहुलाश १० यानेयोउत्तरदियो जोजानेसवज्ञान ॥ ताकोक-
 न्याआपनेदीहोकरिसनमान ११ इनदूनेगुणआपने दिखराये
 तिहिवार ॥ स्यन्दनइकमैनेरच्योतामैइकनिरधार १२ स्यंदनहिज
 येप्रातवहल्लयोतियकीआस ॥ देऊचढितापैचतुर पङ्कजेजायअ-
 वास १३ ताहीपैकोउअौरहिज आयाताकेगेह ॥ तानेहिजकेपच
 सों मांग्यायहीसनेह १४ हिजकीपत्नीतेवहुरिमांगीषीक्यहुअौर ॥
 ऐसेतीनोंविप्रसुत तहांभयेइकठौर १५ चिन्ताकिसहरिदासनेकी-
 जियकहभगवान ॥ इककन्यावरतीमहै कैसेनिबहैबाब १६ ताहो
 निशिकेसमयमेराक्षसइकतहंआय ॥ कन्याकोसोसोगबोविन्ध्याचल
 चितचाव १७ असंवरपणहैबुरो लखीगुणीजनलोग ॥ अतिस्वरूप
 भैसीकहा वनकेदुःखनवोग १८ दियोदानबलिनेअतिहि छल्यो
 आपहरिआय ॥ कियोगर्वदशशीशने दीन्होमूलनशाय १९ ॥ मोदक
 छंद ॥ अबलखीनाहिकन्यास्वरूप । तवछायोमुखपरकरूप ॥ ज्यों
 पायतुषारहिसमलगाय । त्योंभयेविप्रमनमेउदास २० तबलिये
 तीनिहंदिजबुलाय । हरिदासप्रअकियचित्तचाय ॥ तुमकहोज्ञान
 अपनोविचारि । हरिकौनेलीनीवइकुमारि २१ इकक्रह्योज्ञान

सौवचनएह । सुनिलेज्जवचनतुमकरिसनेह ॥ लेगयोनिशचरतुव
कुमारि । परवतमेराखीयहविषादि २२ ॥ दोहा ॥ कहीदूसरे
वातवहमारिनिशाचरखर्व । लाजंपुचीजायतुवशाचहरौसुनुसर्व २३
बज्जरितीसरेनेकछा । स्वंदनहमरालेज्ज ॥ आनौद्विजकीपुचिका ह-
निनिशिचरकरितेज्ज २४ मारगानिशिचरजायउन लायोसंगसो
वाल ॥ गुणतिङ्गनकोअतिभवो सुनुविक्रमभूपाल २५ काकीवह
पत्नीभई कज्जमोंसोंसबवैन ॥ प्रत्युत्तरविक्रमदिया सरसहृदयसुख
दैन २६ जोलाओहनिरक्षको ताकीहैवहवाम ॥ कियोसहायदा-
खनने इनकीन्हाबड़काम २७ ॥

अथछठी कहानी ॥

पइतिकाछन्द ॥ पुनिकहबैतालइकवचनसाज । सुनिविक्रमगयो
सुखहिकाज ॥ इकलसतधर्मपुरभूमिमडि । तहधर्मशीलराजासु-
बुद्धि १ ॥ दोहा ॥ तानुपकेमंचीसुधर अन्धकताकोनाम ॥ राजासों
तिनयवैकही नृपकीजैयहकाम २ देवीकोस्थापिये काह्लमन्दिर
बीच ॥ यहसुनिनृपमन्दिररच्यो सकलशहरकेबीच ३ पूजनकिय
विधिवेदकेदोनोविप्रनदान ॥ नृपताकेपुजनविना करैनहोअलपान ४
इहविधवीतिवज्जदिवसकरतदेविकीसर्व ॥ राजासोंमंचीकछा । बचन
सहितअहमेव ५ ॥ तोमरछन्द ॥ नृपकीजिययहकाम । सुतमांगिये
अभिराम ॥ यहसुनतवचनभुआला गयोदेविपरततकाल ६ बज्जभांति
पूजाकीन । करणारिकेकरिदोन ॥ नृपकीनस्तुतित । सु । तिङ्गलोक
पूजासु ७ तुअकरतिजगकेकाज । सबसुरनकीशिरताज ॥ जबपरा
देवनभार । तवह कियाउदार ८ इकपुचमोकोदेज्ज । करिकैहिये
मैनेज्ज ॥ भइगगनवानीखच्छ । सुतह । यगाप्रत्यक्ष ९ पुनिकरीपूजा
राज । मनकेभयेसबकाज ॥ पुनिआइयानिजगेह । भइप्रेमपुलकित
देह १० कछुवीतियाइमिकाल । नृपकरतराजसुचाल ॥ भयोभूप
केसुकुमार । मनुइन्द्रकांतिसुधार ११ पुनिकरीपूजादेवि । सबभई
परीसंवि ॥ विक्रमसनोइकहंता इकरजकमिचसमेत १२ आवतज्जतो
नृपदेश । अतिकियेनिर्मलभेश १३ तिहिरगामन्दिरदीठि । प्रण
पत्तिकियमतिईठि ॥ त्यौलखीसुंदरवाम । भयोरजकमोहितकाम

१४ लखिदेविमन्दिरआय । करणोरिकौशिरनाय ॥ यहमिलैकन्वा
 मोहिं । निजशिरचढाजंतोहिं १५ बहकहिगयोनिजगेह । भइवि-
 रइव्याकुलदेह ॥ लख्योरजकपितुनेपुत्र । लियेसाथवाकोमिच १६ ॥
 सोरठा ॥ गयेतासुकेगेह जाकीकन्यावहहती ॥ बोख्योवचनसनेह
 कछुवाचनआयोहृदां १७ दीन्हैतानेउभाववस्तुहमारहोबजो ॥ दे
 हैतोहिखभावकहतसवधपनीकथा १८ ॥ दोहा ॥ वचनबुद्धिजव
 वहभयो तवचनकरासनेह ॥ नेरसुतकोतूसुता जोविवाहकरिदेह
 १९ इनह्वं वचनप्रमासकरियुभदिनलगनधराव ॥ बोखिरजककेपुत्रको
 दीन्हैगांठिजोराव २० पुत्रवधकोसाथले आयोअपनेगेह ॥ रहन
 लगेआनन्दसों तिवयुतसहितसनेह २१ एकसमववारजककोभवो
 कछुक शुभकाज ॥ न्वातोआवासुताको बलीसंगपतिसाज २२
 आयामन्दिरकेनिकट आईपिछली शुद्धि ॥ बड़ोपापमैने करग
 रहिनमन कछुबुद्धि २३ बहकहिऔअस्नानकरि मठकेभीतरजा-
 य । दियाखड्गानअशीशपै गिग्रेधरणितलआव २४ देख्योताके
 मिचने परप्रोधरणमेशीश । कीन्होचितविचारि बह कहाकियो
 यहईश २५ ॥ गीतिकाछंद ॥ संसारअतिबहकठिनहैगो समुझि
 चितचिन्ताकरी । लैखड्गतानेशीशअपना काटिहारप्रोताधरी ॥
 दुहमरेमन्दिरवीचतव बहवासनेशोच्योबही । कहैगयेदोनों
 छाडिमाको हृदययहठानीसही २६ ॥ तोमरछंद ॥ तववामठुंठुन
 जाव । देख्योसामन्दिरआय ॥ तहैमरेदेखेदोउ । मनमेंवि-
 चारप्रोसोउ २७ संसारकी बहरीति । समुझेनकोऊप्रोति ॥ सब
 जानिहै यहवात । इनकरानाअपघात २८ हैवाममारहोव । बह
 खड़ीरोवति जाय ॥ मनमेंजोऐसी ठानि । मरिबेकोमनमेंआ-
 नि २९ तिहजायसरवरतीर । मउजनकियोमतिधीर ॥ फिरिआव
 देप्रोपास । नायोसोमायोतासु ३० बहखड्गलेकरहाय । काठनबह
 निजमाथ ३१ गीतिकाछंद ॥ उठितखतसेदेवीनेपकरी भुजायाकी
 धायकै । मैभईह्वंपरसन्नतापै मांगुवरचितचायकै ॥ तूभईह्वंपर-
 सन्नतापै मांगुवरमनभायकै । जोपरेदोनोंमरेभतल इनहिंदेहि
 जिवायकै ॥ देगीगईपातालको लारिसोअमृतधायकै । वासोक-
 हीतजोरुइनकेशीश धरपरनायकै ॥ देवीनेछिड़कोबोहिं अमृत
 उठेमानोसोयकै । बाहमभगरनेलगेदोनों वामकोसुखहेरिकै ॥
 दाहा ॥ शोशजोरतिकेशमय बहनिगबोहेतात ॥ राजकीनकीवाम

भई मोसोकहि सबवात ३१ तब राजा बोलो विहँसि सुनहु बीरबैताल ॥
 तोसोकथापुरातनी कहिहौसोततकाल ३२ नदियनमें गंगा उचित
 मेरुनमाहिंसुमेर । वृक्षनमें तरु कल्प है अंगनमें शिरमौर ३३ जिस
 धरपैवह शिरचख्यौ ताहीकीवहवाम । यहसुनिकैबैतालनेलथो
 हैतरुकोधाम ३४ ताहीछाखबैतालतब लटक्योतरुपैजाय ॥ ताहि
 बांधिकेलेख्यो अपनेचितकेचाय ३५

सातवीं कहानी ॥

दोहा ॥ फिरबोले। बैतालतब सुनुराजा एकवात ॥ चम्पापुर
 एकनगर है चम्पकेश्वरनाथ १ रानीनाम सुलोचनाताके तनयाए-
 क ॥ चिभुवनसुन्दरिनामत्यहि रूपशीलगुणनेक २ सुखसमान
 शशिकेलख्यौ बालघटासमजान ॥ चक्षुमंगासमजानियेभकुटीधनुष
 समान ३ नासाकहियेकीरसम गलाकपोतसमान ॥ दाँडिमदांत
 प्रमानिये अधरविम्बफलजान ४ करपदअतिकोमलसुखद चम्पक
 वरणप्रमान ॥ शशिकीसीकिरनीबड़े वामरूपगुणमान ५ जोदेखे
 यारूपको मोहिजाततकाल ॥ छुटेध्यानतपसीनको गुणअौरूप
 विशाल है ॥ तोमरछंद ॥ मातापितालखिबाल । चिन्ताकरी
 ततकाल ॥ बरढूठियाकोलेय । करिव्याहजाकोदेय ७ सबने
 खबरिअसपाय । तसबीरसकलवनाय ॥ सोदईसबनेसाय ।
 नृपदईबेटीहाय ८ ॥ चौपाई ॥ सबकीप्रतिमादेखीजाने । चितमें
 घरीन एकौताने ॥ ताक्षणआये बालकचारी । तिननेकछोगुण
 सकलविचारी ९ यहसुनिराजा अतिभयमाना । चारौरूपशील
 गुणमाना ॥ इनमेंदेहंसुतामैकाको ॥ भ्रमवशभयोमनोरथयाको १०
 इनकोगुणसबसुताकेआगे । जाहिरकरोनृपतिभयत्यागे ॥ सुताशर्म
 सौचुपहुइरही । तबबैतालनृपतिसों कही ११ राजाकहो सुनौबै-
 ताल ॥ एकशूद्रहै बचनरसाल । दूजो बरपतिजोहिजएना । ज्ञ-
 नीयोगसुतामभवैना १२ ॥ दोहा ॥ वाकेयोगसुतावह नृपसों देहिबि-
 वाहि ॥ यहसुनिकैबैतालतब तरुपैपहुचो जाहि १३



आठवीं कहानी ॥

सबैया ॥ नृपविक्रमकोबैतालतवै इकबानीअनुपमऐसीसुनाई ।
 मिथिलानगरीसबतेअगरीवगरीजहँसंपतिकीअधिकारै । तहंराज
 गुणाधिपभूपकरे बरकीरतितासुकीसिंधुलौछाई । धर्मसौंपूरिरही
 पृथिवी सबसुखप्रजाकोनदुःखहेराई १ ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ तहां
 एकभूपकोपुत्रहैआयो । महंशूरवीरोबड़ानामपाया ॥ चिरम
 देवताको लसैनामभारी । बड़ोधर्मकर्मी महायुद्धकारी २ महा-
 राजकेद्वारसो निजआवै । नहीभेंटताकीसोतौहोनपावै ॥ जितो
 द्रव्यलायैतितोबैठिखायै । महाविभ्रमा तासुकैदेहछायै ३
 दिनाएककीबातहै भूपभारी । महाराजआखेटकीअहीसवारी ॥
 भयोसाथमेंभूपकोसंगताके । बल्योसंगमेंपांयजाकेनथाके ४ सबै
 सेनसेभिन्नराजाभयोहैलख्योअश्वकेसाथमेंजैगयोहै ॥ कहैराजतासो
 अरेकौनतहै महाराज मोसोसनोबातजोहैपूतवैअश्वठाहोमहाराज
 कीनों । कछोकोभयोतूइतोअंगगछीनों ॥ महाराजमेंआपकेपास
 आयो । कछुवातऐसोसमयनाहिंपायो ५ नहीदोषजामे कंकु हेतु
 म्हारो । महामंदहैभाग्यराजाहमारो ॥ महाराजजैपष्टवातेवरोहै ।
 सुनोमैकहीनाहिकाहूदुरीहै ७ ॥ दोहा ॥ दुष्टजननकोसंगअरुबिन
 कारणकोहास ॥ करैविवादनबामसोंकरैतौमलविनासदखामोक्ष-
 पथन सेइयेबाहनखरनहिंलेइ ॥ तजिसरवानीजैविनीतामेंचितनहिं
 देइदबडतगतेअरुन्यायकी राजाकोससुभाय ॥ परस्वामीसेवाकिये
 मिलैतुरत फलआय १० भयोविभक्षितराजतहं कछोतासुसोपात ॥
 लावकछूभोजनलियेकरिकैवलसुतात ११ ॥ तोमरछंद ॥ यहव-
 चनजियमेंधारि । इकलियोमगकोमारि ॥ प्रह्वलितकरके आ-
 गि । तिहिमासदीनोंपागि १२ नृपकोदपितकरियोइ । गृह
 लायहूसंगसोइ ॥ पुनिनृपतिगृहमें आय । कियभृत्यचितकेचाय ॥
 १३ इकदिवसनृपतिबुलाय । कहिवातचितकेचाय ॥ जाओउदधि
 तटवीर । करिकाजआवडुधीर १४सागयोजलनिधितोर । इकलखयो
 कौतुकवीर । देख्योसुदेवीयानापूजाकरीसविधान १५ ॥ गीतिकाछंद ॥
 तहँतेकढीइकबामसुन्दरसकलतनभूपयसजै । सबरीनिपयतामनजुं
 विधिकीनिरखि मनमन्मथलजै ॥ पूछनलगीसौपुरुषसांयह कौन
 कारनपगदियो । इनकहीआयोकाम अपनेरूपतेरेवधकियो १६
 जोकरग्रीचाहैमोहिंपत्नीकुण्ड जायइनाइये । जबन्हायआवैपास

मेरेतवसोहमकोपाइवे ॥ यहसुनतताहीकुण्ड पङ्च्योन्हाव हित
 तामेधरयो । सोआवनिकरयोदेश अपनेसुखदृष्टपठिगसोलर्यो
 १७ यहलख्योतानेवडोअचरणकहीदृपसोआयकै । यहसुनतरा-
 जाकहीमैहलख्यो । तायलजायकै ॥ कहिकैमंगाये अश्वदोनी संग
 यहदृपसुतलियो । वडुलायअपनेविक्त आनंदगमनताथलकोकियो
 १८ ॥ दोहा ॥ पङ्च्योदृपसागरविकट निरखीसोईवाम ॥ स-
 खीएकसंगमेलियेदोलीवचनसकाम १९ जोमोहिआप्रादीजिये
 करडुसोवचनप्रमान ॥ कहीदृपतिमोभत्वसंग करि विवाहसुख
 हाम २० तिनफिरयहउत्तरदियो मैतुवहूपअधीन ॥ कैसेचाह
 भुत्वकोकहदृपवचनप्रवीन २१ तवबुझायराजाकही सज्जनआने
 वैन ॥ करतसत्वजोखायदृष दुग्धधवतिहैधेन २२ करिविवाहगं-
 धवतवदोऊलीनेहाथ ॥ आयोअपनेराजमेंकरिमवकाजसनाथ २३
 तवपछीवैतालने सुनुविक्रमनरनाह ॥ अधिकसत्वकाकोभबोखा-
 मीसेवकसाह २४ राजातनउपकारहित धरतसुनजुवैताल ॥ ताते
 सतसेवकअधिकसनुममवचनरसाल २५ सुनतवखीतरजायकौताही
 अथवैताल ॥ वांधिताहिविक्रमदृपतिचलतभयोउत्ताल २६ ॥



नवीकहानी ॥

तोमरहृद ॥ पुनिकहत वचनवैताल । इकमदननग्रसुधाल ॥
 महवीरवरकरराज । सबप्रजासुखकेसाज १ तहंहिरनदत्तसोनाम ।
 सबवणिकधनकोधाम ॥ त्यहिपुचिमूरतिकाम । हैमदनसेनानाम
 २ इकदिवसहियसुखसाज । वरसमवलखिष्टतराज ॥ निजसंग
 सखिवनलीन । जेसकलगुणनप्रवीन ३ सोगईअपनेसाज । लखेजाब
 सुखदतडाग ॥ तहंसोमदत्तनरेश । मंचीसहितशुभभेष ४ आयो
 लखनआनन्द । सोरूपराकाचन्द ॥ तिहिलखीराजनुमारि ।
 तवमनसुवद्विसारि ५ जोहितभयोसोतात । कहिमिचसोयह
 वात ॥ जोकामविलिहैमोहि । ममजिवनतवहीहोहि ६ यह
 कहतव्याकुलभाव । दृपकीसतादिगजाय ॥ तिहिहाथमेंदहाथ ।
 बोख्योवचनदृपनाथ ७ जोकरैमोसोप्रीति । तोहोहितेरीगीति ॥
 जोतवैप्रीतिसुवान । तोत्यागिहोमैप्रान ८ बोलीसोराजकुमा-

रि । यहवचननृपहियधारि ॥ जोत्यागिहैतुप्रान । तौपापहोय
 निदान ९ सुनियेवचनचितलाय । दिनपचबीतेराय ॥ मेरोसुव्याह
 निदान । ममवचन करहुप्रमान १० मैआयहौतोपास । जिनि
 होहुचित्तउदास ॥ यहकहिगईनिजगेह । भइवृपतिव्याकुलदेह
 ११ ॥ दोहा ॥ इतवृपसुतनिजगेहमे आयोमंचीसाथ ॥ विनाकाम
 मनचलियगेवृपतमयाकेहाथ १२ ॥ तोमरछंद ॥ जबभयोताको
 व्याह । केहुवृपतिसंगउछाह ॥ पुनिगईताकेगेह । पतिसौव-
 ढायनेह १३ सोगईपतिकेपास । कहिवचनसहितहुलास ॥ जब
 करगह्योवृपनाथ । तबजोरिवोलीहाथ १४ सुनियेवचनमहराज ।
 मैकिथोएककुकाज ॥ सोईकथाप्राचीन । कहिवृपतिसौपरबीन
 १५ इनसुनतसहितहुलास । कहीजासुवाकेपास ॥ यहसुनतहीचलि
 वाम । जाकोसहायककाम १६ ॥ दोहा ॥ चलीनामताठौरको
 गयेनिशायुगयाम ॥ मगमेंचोरनआथ कैरोकीसहितसकाम १७
 बोलीतिनसौवचनये सतिकरभंग सिंगार ॥ फिरतसमयमेंदेहुंगी
 भषणसकलउतार १८ रच्योचोरतासत्यपैगईवृपतिकेगेह । ताहि
 जगायोनीदसे बोलीवचनसनेह १९ कहावृपति तूकौनहै आई
 हैकहि काम ॥ देवसुताकैवृपिसुताकैफनपतिकीवाम २० कही
 मदनसेनातवैईवचनप्रकाश । सत्यवचनअपनो करनआईतेरेपा-
 स २१ कह्योसकलवृत्तान्तसो भयोवाटिकामहि । दियेवचनमै
 तोहितवविसरिगईकहसुहि २२ ॥ तोमरछंद ॥ यहसुनतवचनसु-
 बेश । उत्तरदियोसुनरेश ॥ निजपतिलखीतनैन । मैसकलससुभक्त
 बैन २३ निजपतिसुशासनपाथ । लैकामसंगसहाब ॥ आईसुतेरे
 पास । अबकरोपूरणआस २४ ॥ दोहा ॥ सोमदत्तवहीकह्योप-
 रचियदुखकोमूल ॥ हरैप्राणधनतेजबलससुभिनकीजभूल २५ यहक-
 हिसोमनरेशनेभेजीनिजपतिपास ॥ भारगमेंताचोरसो भेंटभई
 सविलास २६ सुनिकेताकेसवचरितसत्यहियेमेंलाय ॥ विदाकरी
 ताचारेनेमिलीसुपतिसौआथ २७ पतिसौसबबीतीकथा दीनी
 सत्यसुनाय ॥ तौवृपतिनेनेहकहुकियोनचितकेचाय २८ पावहुदब
 मेंदुःखबहुबोव्योवचनउदाह ॥ नारीपतिव्रतरूपहैविद्यापुरुषसिं-
 गार २९ यहकहिकैवैतालने कहेवृपतिसौबैन ॥ तीनोंमेंसतकौनको
 अधिकभयोसुखदैन ३० अन्यपुरुषरतजानितेहिपतिनेदीनीजा-
 न ॥ तातेसतभयोचोरको सुनुवैतालसुखदान ३१ यहसुनकेतास्थानपै

गयोवद्धरिवैताल॥वांघिवद्धरिविक्रमवृपतिसँगलैचल्योउताल३२ ॥

दशवीं कहानी ॥

धौपाई ॥ कहवैतालपुनि अङ्गुतवानी । सुनहुवृपति वरअति
सुखदानी ॥ गौड़देशमघिवसएकदेशा । वर्दमानजाहिरशुभवेशा
१ गुणशेखरराजातहँरहई । मंचीतासु सरावगअहई ॥ अभयचन्द्र
तिहिनामकुजाती । करैद्रोहशिवसौं दिनराती २ तासुवचनमे
जववृपआवा । सकलधर्मकर मूलनशावा ॥ नगरमध्यनिहिकरी
दुहाई । जोकरैवैष्णव धर्मसुभाई ३ तिहिनिकासिद्धप देशहि
देई । सरवसुखीनितासुकोलेई ॥ सुनिकेप्रजापरमभैपावा । पुनि
मंचीकहवचनसुहावा ४ महाराज सुनियेसमवानी । कहौधर्ममव
सुखकेखानी ॥ जोअधर्मरतपरघनलेई । अनतजन्मधरिसोतिहि
देई ५ कामक्रोधमदलोभअनेका । इनकरिवशधरिजन्मअनेका ॥
ब्रह्माविष्णुब्रह्मसवदेवा ॥ आयभूमिकरवावतसेवा ६ इनतेगोधनअधि-
कसोराई । रागद्वेषमदरंचनभाई ॥ दृषभअथकरिदिनअररा-
ती । अवतअमतसमपयइहिभांती ७ कहँपपीलिकहजपयंता ।
कररक्षाजगजाईसन्ता ॥ जोपरतनभक्षयजगमाहीं । निजतनकर
बढिबारिकराहीं ८ अन्तकालसोनर्कहिजैहे । सकलयातनायमकी
पैहे ॥ बहकहिसकलज्ञानससुभावा । निजसतितिहिहिवदइसुक-
रावा ९ माननधर्मऔरहिवराजा । सावगकहेकरैसोकाना ॥ काम
धिवशसोभवजनरेया । भवउअधीनतासुसुतदेशा १० धर्मइजतिहि
नामसुहावा । परमचतुर परजहिमनभावा ॥ करैधर्मसोजावपताई ॥
प्रजानदुःखपावजिभिभाई ११ एकदिवसकरचरितसुहावा । अभैचं
दकरपकरमैगावा ॥ औरकरायकुगतिकरिराजा । खरचढ़वावव
जावसुवावा १२ देशनिकारिदीनवृपसोई । नीचकुबुद्धिअंधरतजो-
ई ॥ कीनद्रोहतिहिदेवनकेरा सोफलपायउदुष्टघनेरा १३ एकदि-
वससवरानीसाया । लखनवाटिकागेवृपमाया ॥ गयेसकलजनसंगव
नाई । देखीतहांसुखदअमराई १४ बागमध्यसरएकसुहावा । सर
सिजप्रफुलितनिर्मलआवा ॥ तिहितटआसनसुखदचिछाई । वैठेवृप-
तितहांमनलाई १५ ह्योदिवसनसरवृपतिअन्हावा । तोरिक्कमल
रानीपगछावा ॥ खावतासुकीचोटसुरानी । पगट्टेउसुखआवन

बानी १६ आयद्वपतिऔषधितिनकीन्ही । सकलसुधारिवुद्धि वृष्ट
 दीनी ॥ भईनिशाभोचन्द्रप्रकाशा । विरहिनिदुखभोकुसुादनिहा
 सा १७ दूसरिरानीकोमलचोला । लखतवांदनीपरैचफफोला ॥ व-
 ङ्गरिगृहस्थीगृहतेराई । मूसरशब्दभयोदुखदाई १८ शब्दसुनतपु
 नितिसरिरानी । मस्तकखंदभयोदुखदानी ॥ मुर्छाखायगिरीभुव
 माहीं । धरीआपनीशिरतरवांही १९ ॥ दोहा ॥ यहकहिविक्रमसौ
 कछोवचनवङ्गरिवैताल ॥ इनमेकोसुकुमारिहै कङ्कवावीउत्ताल
 २० ॥ सारठा ॥ जिहिमस्तकमेपीर भईगिरीमूर्छितसुभुवि ॥ सुनु
 बैतालमतिधीर ॥ सोईअतिसुकुमारिहै २१ यहसुनिकेवैताल जाय
 वञ्चीतरुपैवङ्गरि ॥ वांधिताहिकरिख्यालविक्रमसंगमेलैचल्या २२ ॥



ग्यारहवीं कहानी ॥

गीतिकाछंद ॥ सुनियेनपतिइककथाभावन पुरबपुरशुभग्रामहै
 करेतिहिकोराजवङ्गभनीतिहीकोधामहै ॥ मंचीप्रकाशितसत्य
 ताकोतासुकीइकवामहै । रूपमेजमुइन्दिरासुनिलहिमताकोनाम
 है १ तिहिकहीरानीअधिपसौ इकवातअतिसुखपायके । जो
 भोगवैनहिंभोगसुन्दरिकाभिनी कोपायके ॥ ताकोअकारथजन्म
 जानोआयकेभुविकहकियो । योकिहिसुदेकोराजकोसबभारमंची
 कोदियो २ ॥ मोदकछंद ॥ तिहिभांतिअनेकनभोगकिये । मन
 कोसबकारणपूरिलिये ॥ मंचीइकवेरसुगेइमयो । मनताकरेमहादुख
 माहिंछयो ३ तवतासुकीवामनेऐसेकही । हमसेवासमयकछुचक
 गही ॥ तववामकोउत्तरऐसादियो । हमभोगतहैअपनोसुकियो ४
 सवराजकोभारनरेशदियो । तहंवाकुलताहिरंगकिया ॥ निशि
 द्यौसहिचित्तपैचितरहै । मनहींमनहींतननितदहै ५ यहवातसो
 वामनेफेरिकही । कछुतीरथकीहमचित्तवही ॥ वृपसौयहजायके
 लीजियजू । सवराज्यकोभारसोदीजियजू ६ यहठानिसोचित्तमे
 मंचलियो । तिहिराजकेपासकोगमनकियो ॥ प्रनआगेभुआलकेखो
 लिदियो । वृपआयसुदीनप्रसन्नहियो ७ ॥ गीतिकाछंद ॥ ऊइकौ
 विदातवचल्योतीरथ वामनिजसंगमेलई । पङ्कच्योउदप्रिकेपास
 सोईपुण्यमेरतिमतिभई ॥ देख्योससुइमेख्यालअद्भुतएकतरुअद्भुत

धन्यो । तामें मणिनके पातलागे पुष्पपुखराजनि सन्यो ८ विद्रुमलगे
 फलतासुतरमें देखि मनविश्वमकिया । छीन्यो उदधि मनधनुषसुर-
 पतिआपने करमें लिबो ॥ तापरलसै एकसुवरवामसाकामपत्नीजा-
 निबो । करसोवजावतिवीजवाकीषुद्धिचंचलमानियो ९ देखतभई
 सोलोपवाकेतुरतगृहफिरिआइयो । ह्वै नववृषकेजायसंमुखवचन
 सत्यसुनाइयो ॥ जोलखबोयोनेचरितसगरोवृषतिकेआगेकछ्या ।
 सुनिकेवृषति कोचित्तलोभो जानितिहि यलचितचछ्या १०
 राजमंषीसौपि सिगरोआप त्यहिलोकोगयो । देख्योतहांसो
 सत्यकौतुकनिरखितनचानंदभवो ॥ बूढ्योवृषतिमधिसिंधुतवजाय
 केतिहितरचयो । जावतसैवइनायकावरसकलकंचनमेंमन्यो ११ ॥
 चौपाई ॥ पुनिपातालगयोतरसोई । कहतिनायकावृषसनजोई ॥
 क्यहिकारजयहंआवभुवाला । सोसनवचनकहौततकाला १२ वृष
 कहवचनरूपतवनारी । मोछ्यामामनमोहनडारी ॥ त्यहिलगि
 मेंआवउंतवपासा । पुजवडसवमामनकीआसा १३ तवतिनउत्तर
 दिवोविचारी । छष्यपचकीचौदधिकारी ॥ तादिनमोठिगरहउ
 जाराजा । तोपुजेसवमनकेकाजा १४ ॥ गीतिकाछंद ॥ मानीवृषनेवात
 ताकोव्याहताकसंगकियो । आईचतुर्दशदिवसकोदिनवृषतिने
 यहकहिदिबा ॥ यहसुनतराजाचख्योह्वंतेछिपतमोसोसबलख्यो ।
 इनलख्योनिश्चरसंगतियकेजोचछ्यासुखसाभख्यो १५ अरेपापीदुष्ट
 निश्चरजायगाकहंभागिकै । यहकहिदियोएकखड्गताकेगयोधिर
 तनत्यागिकै ॥ यहलखतबोलीकामिनीतवकाजबहभारीकिबा ।
 नश्वापितुकोशापमेरोसकलमनचानंददियो १६ कैसेभयोहोशाप
 तोकोसोकथासवभाषियो । लागीकहनसोतवैसुंदरिवचनयोचित
 राखियो ॥ भोजनकरतहोपितामोसंगएकदिनकछमैगई । एकअ-
 सुआयोपासमेरेशापकीयहगतिभई १७ ॥ तोमरछंद ॥ यहकही
 वृषनेवात । चलसंगमेरेतात ॥ पुनिजाबोपितुपास । यहवचनसत्यप्र-
 कास १८ लेसंगत्यहिवृषनाथ । हियनाथशिवकोमाथ ॥ आयेसोअ-
 पनेराज । सबपजियामनकाज १९ इकदिवसबोलीवाप्र । मैंजाइहौ
 पितुधाम ॥ वृषनेकहीअनखाय । पितुगेहवेगिसिधाय २० इनलख्यो
 पतिसोमलीन । त्यहिवनरोकिसोदीन ॥ वृषनेकहीयहवात ।
 पितुगेहकोनहिंजात २१ इनकहीपितुगंधर्व । मोहिदेखिकरिहै
 गर्व ॥ मैंमनुषकीह्वंनारि । यहलेछचित्तविचारि २२ सुनिदोनकी

यहवान । सुनिकहेमंचीप्राण २३ सुनिपुच्छियोवैताल । विक्रमकहो
भूपाल ॥ कर्वाहकाजमंचीप्राण । कीनेहोसोसुविधान २४ योंकहेविक्रम
बैन । वैतालसुनसुखदेन ॥ नृपकरतभोगविलास । तजिराजकीसब
आस २५ सबप्रजादुखहिलीन । लखिभवोमंचीदीन ॥ त्वहिकाज
छांडीदेह । सुनिभेदकरिममनेह २६ यहसुनतरुपैजाय । लटक्यो
सुवाहीमाय ॥ नृपवांधिकेतिहहाय । लैचल्योअपनेसाय २७ ॥

बारहवीं कहानी ॥

दोहा ॥ विक्रमसोवैतालपुनिकहनलग्योयेबैन ॥ चूड़ापुरयक
नगरहै सुनहुनृपतिसुखदेन १ चूड़ामथिराजातहां करैअखण्डित
राज ॥ देविखामिताकोगुरुविप्रनमेशिरताज २ हगिखामीताको
तनयसुंदरकामसमान ॥ नीतिनिपुणपरिहृतसुधरसुरगुरुपटतरजा-
न ३ साकाहूद्विजकीसुताकरिविवाहनिजसंग ॥ लायोअपनेगेहमें
बाब्योप्रेमअनंग ४ एकसमयग्रीषम समय सोवतसोनिजगेह ॥ उ-
धरगोहोसुखवामको सोलखिसहितसनेह ५ जातहुतोगंधर्बकहुंन-
यनविमानअरूढ़ ॥ सोलखिताकेबदनको मोह्योभतिकरिगूढ़ ६
लैविमानमेंतासुकोगयाआपनेगेह ॥ इतजाग्योसुतविप्रको भईवि-
वाकुलदेह ७ सकलगेहदुदतफिरगो लखीनहोकाहुंवाम ॥ छांडि
सकालसंसारसुखभोगीप्रतिधाम ट करतफिरततीरथगमन एक
समयकहुंजाय ॥ भिक्षामांगनगेहकिहुंगयोहतोसुखपाय ८ लेभि-
क्षासोविप्रसुत गयोसरोवरतीर ॥ आथोबटकेदक्षतर धरगोपाच
मतिधीर १० बटजइतेएकसर्पकटिसूंध्योसोईपाक ॥ भयोहलाहल
अन्नअहपायोद्विजमतिथाक ११ भुखदह्यो।जबअधिकतबखाईसोई
खीर ॥ खातचआविषसकलतन पहुंध्योगृहमतिधीर १२ कहीजाय
द्विजसोवचनतेभिक्षाविषदीन ॥ जातप्राणमेरेसुअबबहुोपापयहकीन
१३ योंकहिकेताकेतहांनिकसेतनतेप्राण ॥ यहलखिकेद्विजवामनिज
ताड़ितकरीनिदान १४ गृहतेदेईनिकारिके करिकेद्विजमेंरोष ॥
कहिविक्रमइनमेंभयोअधिककीनकोदोष १५ प्रत्युत्तरविक्रमदिया
होतसोविषसुखसर्प ॥ नहोदोषकहुविप्रको जोतनदीनहोअर्प १६
काहुकीनहिंदोषकहुसुनहुवचनवैताल ॥ यहसुनिकेताहीतरहि
चढ़तभयोततकाल १७ ॥

तेरहवीं कहानी ॥

सोरठा ॥ लखीकहनवैताल सुनुविक्रममतिके उदधि ॥ सुनिवे
 कषारसाखनायनदुखसंदेशकी १ ॥ चोपाई ॥ चन्द्रहृदयनगरीइक
 अहई । तहँरखधीरभूपवररहई ॥ तहांधर्मध्वजसे ठिसुहावा
 सोभनिसुता तासुजगगावा २ ॥ जीवनरूपवतीवहनारी । मखिन
 लखततिहिअधिजिवाती ॥ तिहिनगरीमधिचौरअपारा । होन
 नपावतकहुग्ववहारा ३ ॥ सकलवधिकमिलिसम्मतकीन्हा । राजा
 मन्दिरकइपगदीना ॥ जायवृपतिआगेसवकही । जोकहुवीति
 विघाउररही ४ ॥ सुनिकेवपधीरज बडुदयऊ । रखवालीकोबडु
 जनकरऊ ॥ तौहंआवचोरदुखदेई । हरिकेवधिकनकोधनलेई ५ ॥
 लखिकेचरितवृपतिहिवहारा । आपजानकरमंपविचारा ॥
 वांधिअससवचित्तहडाई । विगतयामनिशिगयोसोराई ६ ॥ इष्टि
 वृपतिइकचोरसुआवा । मिलेपरस्परअतिसुखपावा ॥ हरखडुग्व
 दोऊमिलगयऊ । बडुतघरनतेसवकहुखयऊ ७ ॥ दोहा ॥ गयो
 संगलैवृपतिको चोरआपनेगेह । ठाढोकरीनिजपीरिपर भीतर
 गयोसुतेह ८ ॥ दासीइकताकेहती आईकाहूकाज ॥ द्वारवृपति
 ठाढोलख्यो बोलीवचनससाज ९ ॥ लखिकेतेरेरूपको आवतिदया
 सुमोहिं ॥ चोरआवअवगेहते वृपवरहनिहैतोहिं १० ॥ यहसुनिकै
 ताहीसमववृपआयोनिजराज ॥ करीबडाईचोरपैसेनाअपनीसाज
 ११ ॥ बेरिलियोताकोसुघरवृपअपनेसहजोर । हतोदेवताचोरकीनग-
 रीकोधिरमोर १२ ॥ गयोदेवकेपासवहसकलसुनायोभेव ॥ सुनतक्रोध
 करितासमव आयोत्योहीदेव १३ ॥ तोमरछंद ॥ तादेवकोलखि
 रूप । मनमेंडरौअतिभूप ॥ तिनआनि मारीसेन । सन्सुखपरै
 कोउहेन १४ ॥ जैसेलखतमगराज । भजिजातनागसमाज ॥ तैसे
 भयोवृपसोव । सबसहिहिअकीखोय १५ ॥ त्योचोरबोल्थोवैन । तोहिं
 लाजआवतिहैन ॥ रखमेंभजतहूशूर । त्यहिमातुसुखमेंधूर १६ ॥
 यहसुनतकर्कशवात । बडुभयोक्रोधितगात ॥ करियुद्धभांतिअने-
 क । लियोवांधिचोरविवेक १७ ॥ लायोसुअपनेराज । ताकोसुवांधि
 समाज ॥ करिदृष्टयेआरूढ़ । दिवदयडकस्मितिगूढ़ १८ ॥ तबडु
 कुमक्रियमहराज । लेजाडुशूलीकाज ॥ त्यहिचलैगहिलैलोग ।
 होनाशहीकाभोग १९ ॥ दोहा ॥ तनबाकहूसेठकी सुनतचोर
 वैन ॥ जायबडीनिजमहलपै ताकोदेखतनैन २० ॥ लखतचोरके

रूपको भईसोव्याकुलनारि ॥ आईपितासमीपसे बोलीवचन
 उचारि २१ जावहुडाओघोरको जोचाहोपितृमोहिं ॥ जोचाहैं
 सोलोहिंरूप सांचकहतहोतोहिं २२ जावसेठरूपसोकछो पांच
 लक्षधनलेऊ ॥ छपाकरोमोपरअधिकछांडिघोरकोदेऊ २३ रूपति
 कछोनहिंछाडिहो सुनिआयोनिजगेह ॥ कहीसुतासौंवातसबवऊ
 समुझायसनेह २४ गयोघोरशूलीनिकट तुरतबढ़ावोताहि ॥
 ज्ञानविगततातिभयो मरयोसोतिहिंक्षणमाहिं २५ सुतावधिक
 कीताससब आईताकेपास ॥ हंस्योप्रथमहींघोरलखि रोयोहसु
 उदास २६ शिरघरिताकेगोदमें सतीहोनकेकाज ॥ चितावनाई
 बऊरिदह वैठीसाजिसुसाज २७ ताथलज्जन्दिहरदेविको उतोसुनऊ
 नरनाह ॥ लखिताकोसाहसअधिक गहीभवानीवांह २८ भई
 बऊतसंतुष्टवै तेरेछपरबास ॥ सांगुचहैमोपैसुवर देउंतोहिंत-
 काल २९ जोसोपरसंतुष्टतु जियैपुरुषवहमात ॥ एवमसुदेवीक-
 छी साहसलखितिहिंगात ३० अमतलायपातालति डारोतिहि
 सुखआय ॥ जग्योनींदसोवतमनऊं काहुदियोजगाय ३१ तबवो-
 ल्योवैतालवह सुनुविक्रमममवैन ॥ हंस्योघोररोयोसुखी कही
 सत्वसबवैन ३२ विक्रमनेउत्तरदियो सुनऊवीरवैताल ॥ वधिक
 सुतासरवसुवपहिं देतिउतीतिहिकाल ३३ वाकोप्रतिउपकार
 सैं कहकरिहोजगवीच ॥ यहससुभयोउनचित्तमें तातिरोयोनीच
 ३४ हंस्योबऊरियाकारने अन्तसमयहनप्रीति ॥ करीआयभग-
 वानकी समुभिपरैनहिंरीति ३५ सुनिवैतालवाटछपैलटखोतुरत
 हिंआस ॥ विक्रमताकोवांचिकौ बल्योचित्तकेचाय ३६ ॥

चौदहवीं कहानी ॥

होहा ॥ पुनिबोख्योवैतालवर बानीअतिगंभीर ॥ कुसुभावंति
 नगरीसुखद सुनुविक्रमरणधीर १ तहांरूपतिसुपिचारहै ताकेत-
 नयाएक ॥ चन्द्रप्रभासांचीप्रभा जगमगरहीअनेम २ ॥ मजंगप्रयात
 छन्द ॥ गईबागपैघैरकोपुचिताकी । छटापुपहीकीसबैदेइवाकी ॥
 इतोविप्रकोपुचतावागमाहीं । परयोहोगहैछक्कीचाहिछाहीं ३
 गईराजकन्यांसखीसंगकीन्है । लखीबागवैलीनखेलीसखीने ॥ लखै
 पुण्यवाटीतहांसोमईहै । लखीविप्रकेपुचयोभामईहै ४ लखैकामिनी

धीरताकोमयो है । बड़ोकामकेबखसोईमयो है ॥ गिरजोमरहाखा-
 यकैभमिमाही । रघोषेतहै राजकन्याहिमाही ५ गईसंगलैकैसखी
 गेहहीमें । रघोषेतनाहीकछूदेहहीमें ॥ यहाँविप्रनेपुचसुदेविसा-
 रे । परजोभमिमेंघीशपैवाहधारे ६ तहांमूलधर्माशशीविप्रआयो ।
 हतेशाश्वताविधातापढ़ायो ॥ लख्योविप्रकोपुचनेहोशभारीदुह
 चित्तमेंवातऐसीविचारी ७ ॥ सोरठा ॥ मूलदेवयहमात कहीशशी
 प्रियबंधुसौ ॥ कहीबहदुःखितगात मारजोकामिनिजैनशर ८ किर-
 कितासुपैनीर ताकोदिवोजगायकै ॥ वचनकछोपुनिधीर कहतुव
 दुःखघरीरमें ९ कहियेतासोपीर करैदुःखकोदूरिजो ॥ व्याप्यो
 कामशरीर मगनयनीनवननहन्यो १० जोवहमिलिहैमोहिं सु-
 नहुविप्रवरमर्मवचन ॥ सखसुनावहुंतोहिंतीप्राखनतेराखिहौ ११ ॥
 दोहा ॥ कहीशशीनेवातवह चलोहमारगेह ॥ बलवतावहुंतोहिं
 कछुजासेरहतुवदेह १२ मूलदेवनेवहकही जोसांगेममपास ॥ सोई
 सवकरिदेहिंगे पूजेसवतुवआस १३ गयोदुहकैसाथवह व्याकुल
 विरहघरीर ॥ मगनयनीशरज्यहिलगे सोधरकवहुंनधीर १४ गुट-
 काहैतववाधिके मूलदेवद्विजराज ॥ दीनहेताकेहाथमें काछोमेद
 त्वहिसाज १५ जोगुटकाइकसुखधरे तरखीवालाहोव ॥ दूजेको
 जोसुखधरे पुरुषवनेफिरिसोव १६ मूलदेवनेतासमय बालाताको
 कीन ॥ आपटवनिसंगले बपगुहमारगलीन १७ पडंछ्योहोदर-
 कारमें लखिद्विजकियोप्रणाम ॥ तिनहुंपडिकैइलोकइक दिव्यआ-
 श्रियसुखधाम १८ काहिकारखआवनकियो कहियेचित्तविचारि ॥
 तवबोख्योद्विजराज्यह कपठहृदयमेंधारि १९ मेरेसुतकीवामबंध
 रूपगुखनकीराशि ॥ आवोरखनपासतुव पुरबहुमेरीआश २०
 नामहमारीऔरसुत गयोराहमेंखोय ॥ तिनकोठुंठनजातहौ संग
 निवाहनहोव २१ ठंठलावहौआपनेपुचवामनिजसाथ ॥ तवयाहु
 खेजावहौसुनोसत्यवपनाथ २२ राखिगबोवपगेहमें पुजवमताकी
 आस ॥ आपआवनिजगेहमें कीनोंपरमहुलास २३ राजानेनिज
 सुताठिन राखीसोईवाम ॥ शयसरहुमतिछांडियो कहैदेतुमति
 धाम २४ एकसमबनिशिकेसमबधवनकियोदुहुंसंग ॥ कहीकषा
 सवरागकी जैसेतीतंग २५ होअनिधामें पुरुषवहरहैदिवसभरि
 नाम ॥ करेभोगवपसुतासुन पुजवैसनकेकाम २६ गर्भरघोवपकन्य
 का चित्तमेंचिंताकीन ॥ मंचीएहउत्समहतो गईतहांपरकीन २७

निरखतयाकेरूपको मंचीसुतवेहाल ॥ सुद्विरहीनहिनेकतन ऐसो
 भयोहवाल २८ ॥ तोमरछन्द ॥ निजमिषसौयहवात । कहिमंषि
 सुतभवदात ॥ जोमिलेयहचियमोहि । तोजिवनमेरोहोहि २९
 राजागयोनिजगेह । सकुटुंबसहितसनेह ॥ मंचीसुनेवेवैन । निजसुत-
 हिनिरषिअचैन ३० ॥ वृषगयोसोततकाल । सुतकोकह्योसवहाल ॥
 सुनिवृपतिसाधीमौनायहवातनहिंकह्युहोन ३१ ॥ यहधर्महैनहिराज ।
 रंहेधर्महीसेलाज ॥ जगमेंपदारथधर्म । हेधर्महीतेकर्म ३२ ॥ बड्डपुपपै
 लखिकष्ट । द्वैरह्योमंचीमष्ट ॥ दिव्योअन्नजलकोत्यागि । सुतकेसनेह
 मेंपागि ३३ ॥ दोहा ॥ महाराजमंचीतनय तजतक्षणकमेंप्राण ॥ मंची
 विनसवराजको नशिहैकाजनिदान ३४ ॥ महाराजवाविप्रको गये
 बड्डतदिनबीति ॥ कोजानैकहंहोगवो होतनचितप्रतीति ३५ ॥ ताते
 ताकोदीजिये मंचीसुतहिवुलाय ॥ जोआवैतोलेहिने वाकोहम-
 सभाय ३६ ॥ सबनेजवसमभायके कहीवृपतिसौवात ॥ तवबुलायद्विज
 कीवधू कहीवृपतिश्रीदात ३७ ॥ मंचीसुतकेसंगमेंकरतूभोगविलास ॥
 तवबोलीचियवचनवर सुमुष्टपवचनड्डलास ३८ ॥ जोआज्ञामैदेडंगी
 सोईकरौप्रमान ॥ तोजाऊंयहगेहमें समभोवचननिदान ३९ ॥ प्रथम
 जायतीरथकरो सकलसोपावनदेह ॥ तवजैहोयहियेहमेंकरकेया
 सोनेह ४० ॥ मंचीकोसुतबोलिके कहेवृपतिएवैन ॥ सकलतीरथनजाय
 तुमफिरिआवड्डसुखऐन ४१ ॥ जायहमारगेहयहजवहमतीरथनजा-
 य ॥ गर्इतासुकैगेहमें विप्रबधूसुखपाय ४२ ॥ तवप्रधानसुततीरथन गवो
 सहितउत्साह ॥ इतयहताकीवामठिग शयनकियेचितचाह ४३ ॥
 करतवार्ताप्रेमकी आपुसमेंधुगनारि ॥ एकसखीबोलीसुन्धोमारत
 कामकटार ४४ ॥ स्त्रीरूपीपुरुषजो उतोविप्रसुतबीर ॥ भोगकियोता
 संगतिनहितचितसौमतिधीर ४५ ॥ षटपद ॥ ऐसेदिनबीतिगेतीर्थकरि
 सोईआयो ॥ सुनीविप्रसुतवात पुरुषबनिनिजग्रहधावो ४६ ॥ मयो
 दुड्डनकेपासजाययहवचनसुनायो ॥ आयोमैकरिकाजयत्तयोआयव-
 तायो ॥ अबवेगिदृषाऐसीकरो वहरहैनारिमोंसंगमें । मेरोजीवन
 तवहै जवपरैभंगनहिरंगमें ४७ ॥ सुनिवेदोउविप्रवातवाकेमुखबीके ।
 बन्धोहृदएकपुरुषधुवा वहरहैहीके ॥ चलेवृपतिकेनेहदुड्डमिल
 कपटवेषधराखख्योतिन्हैअहराजजानिचितवेषविप्रवर ॥ आदरतिन
 कोअतिकियोलीन्हैनिक्कटविठावके । कुशलप्रन्नपूछनलगेतोहीवृप
 सुखपायके ४८ ॥ दोहा ॥ बड्डतदिवसपाखेवहां आवनकियद्विजराजा

कहिबेसोईआपनो मोसोहितकरिकाज ४९ पुचवधुजोआपकोसो-
 पिगयोमहराज ॥ सोईहमकोदीजियेहोतहमारोकाजपू०जोकहु
 बीतीथीकथाकहीराजनेसोय ॥ सुनिद्विजवरअतिकोपकरिवोख्यो
 सुखतेजोयपू१पुचवधुदीजैहमैनातरदेहोयाप ॥ राजाहैकैकपटकदि
 महालेतहोयाप पू२ वपतिउरयोद्विजयापतेजोकहिहोद्विजराज ॥
 सोईचितमेंधागिकैकरिहोतेरेकाज पू३ जोउरपतममयापकोअ-
 पनीसुताविवाहि ॥ करैठीलमतिमोसुतहि देउवपतिचितथाहि
 पू४ राजाचितमेंससुभिकहुलीन्हैविप्रबुलाय ॥ दर्इविप्रसुतकोसुता
 न्वाहीचितकोवाय पू५ लेकरिकैवपकीसुता आयेअपनेधाम ॥ आ-
 पसमेंभगरनलगे कुटिलविवशहकाम पू६ इतनेकहिकैवचनवर
 बोखिउख्योवैताल ॥ वपतिवामवहकौनकी भईकहीउसास पू७
 बोख्योविक्रमवचनयेभईशशीकीवाम ॥ भयोसभाकेमध्यमेंवरविवाह
 अभिरामपू८ ॥ षटपद ॥ इतोर्गर्भमेंपुचनाहिं वशकाहजान्यो । ताते
 रानीपुचशशीकीनीतिबखान्यो ॥ वहभगरतहैव्यर्थकाज नहिंचित
 मेंआनत सुनु वैताल बातमें तोसं भानतपू९ यहसुनत बात वैताल ने
 मारगपुनि तरको लियो । बांधिताहि वपसंग लै निज कारज में
 चितदियो ॥ ६० ॥

पन्द्रहवीं कहानी ॥

गीतिकाछंद ॥ वैताल बोख्यो सुनहुं राजा चरित वक सुनि-
 लीजिये । पर्वत हिमालय खच्छ भुवमें वैन साँच पतीजिये ॥ जो भूत-
 कोतु सुराजताको धर्म को अब करतुहै । चारो वरखसुखवसे ता बल
 दुःख जगके हरतु है १ तप कियो ताने अर्थ सुतके कल्प तर वरपै
 गयो । बडभांति पूजन कियोताको लखि प्रसन्न सुबो भयो ॥ वरमो
 गिवपजो वहे चितमें काज सोई होवगो । हूँ है मनोरथ सकल प्र-
 रथ दुःख मनको खोवगो २ जो छपामोपर करीसुरतर मोहिंइक
 सुत दीजिये । जासो रहै मम काज निचल काजमेरो कीजिये ॥ वीं
 होवगी यह सुनत वप चित अधिक आनंद में हयो । आयो सदन
 में गये कहुदिन एक सुतताको भयो ३ जो भूत बाहनाम ताको व-
 रयो विप्रन आयकै कहु गये वैसो पयो विद्या परम चितसो वाव-
 के ॥ करी हियमें मक्ति शिवकी सुवश घरखी है खियो । सब काज-

कीने धर्मही के दान बड्ड विप्रन दिवो ४ इकवारतिननेजावसुखसो
 कल्पतरुसेवनकियो । वहभयो बड्डतप्रसन्न तापैसांगितवदकवरलि-
 यो ॥ मेरी प्रजाहेजितीसुवपैतिनहिंलक्ष्मीदीजिये । कोजदरिद्रीरहे
 नहिंयहकाजमेरोकीजिये ५ वरपावभायो नगरअपनेप्रजाधनपूरी
 भई । कोईनमानतबधनवृषकोविपतिकीगतिनधिगई ॥ बंधुज-
 नजेहतेवृषके तिनहिंयहचितमेंधरी । लोबोअहोहैराजताको
 कुमतिमेंतिनमातिकरी ६ यहसुनीचर्चासकलराजापुषपासुबुला-
 यकै । कीतीव्यवस्थाकहीतासोसकलसबसमुभायकै ॥ तिनधारि
 लीगहोधर्मचितमें राजकोतिनकोदियो । हरिकेशरखमेंनेहकरिकै
 गमनतपहितवनकियो ७ पुड्डंमलयचलंजावपर्वतकुटीएकवनायकै ।
 दोऊपितासुतरहेतामेंचितहरिसोलायकै ॥ तहएकवृषकेतनव
 वृषसुतनेहइनमेंअतिभयो । दोऊगयेइकसंगपर्वततहभवानीसठठ-
 यो ८ तामेंलखीइकसुतावृषकीवीनकरमेंसोलिये । वैठीरिभावति
 हीभवानीदीठनीचेकोकिये ॥ तासोवृषपतिसनेहवाब्योदुहंतनव्या
 कुलभये । सकुचायतनयागईवृषकीइतसकुचगृहयेगये ९ ॥ मोदक-
 छंद ॥ इहिभांतिसोदुःखमेंरातिकटो । जबहीरविकीकिरनेप्रगटी ॥
 वृषकन्यामन्दिरमाहिंगई । वृषकेरुतआनिकेसुदिलई १० ॥ सो-
 रठा ॥ पूछीवृषसुतवातवाकीसखिसोआयकै ॥ कहोसत्यअववात
 यहकन्याहेकौनकी ११ मलजकेतुकीवालमलजवतीवहनामहै ॥
 नखशिखरूपरसालपजनआईदेविको १२ कहियेअपनोनामकहां
 वाससुतकौनके ॥ आयेआंकिहिकामसकलकहोमोसोकथा १३ ॥
 गीतिकाछंद ॥ इनकहीअपनीकथातासोआवअनरानीकही । ताने
 कहीवहंजावपतिसोसुतावरठंडीसही ॥ तानैकरीचितबड्डतचिंता
 पुषकोबुलवायके । कहीलावाठंडिकेवरवहिनकारखजायके १४
 मेंनेकहोगन्धर्वराजारामतजिआयेवहां । ताकेसुतहिकोबोखिला-
 योहोअपर्वतपैजहां ॥ मिभावसयेसुनतपितुकेवैनआनंदकेअरे । तुरत
 हिमयोनहिंदेरकीनीबरखपर्वतपरधरे १५ वृषसोकहीवहवातताने
 आपनोसुतदीजिये । हमदेहिंनेनिजवहिनबाकोसंगमेरेकीजिये ॥
 यहसुनतहीसुतसंगहीनोराजघरकोआइयो । वृषनेदईहेक्वाहि
 कन्यापरमप्रितसुखपाइयो १६ ॥ तोमरछंद ॥ तहकरिसुआपन
 व्याह । आयेकुटीकेमाह ॥ लिबवामसारोसंग । हेहियेपरमसंग
 १७ सोलखनपर्वतकाज । संगवामभातासाज ॥ त्यहिलख्योअहि

सुटेर । पृष्ठतभयोत्थहिनेर १८ ॥ गीतिकाछंद ॥ इनकहीआवत
 गरुडघ्रांहीसर्पकोभक्षणकरे । यहपरप्रोअस्थिसमूहताकोनिरखि
 मनचिंताकरे ॥ ताकोविदाकरिदियोसंगतेआपइकलोतइंगयो-
 जइरदनवैठीकरतबुढ़ियातासुसोपृष्ठतभयो १९ ॥ दोहा ॥ कछ्योसक
 लहसांततिनमोसुतवारोआज ॥ ताकेदुखसेरदनमेवैठीकरतिसुराज
 २० कहीबपतिनेवातयइतोसुतवदलेप्रान ॥ देहुंगरुडकोआजमे
 सत्यवचनमसमान २१ शंखचुड़वाहीसमयआयोअपनेगेह ॥ तिन
 लखिकेबपकोतनयवचनकइकरिनेह २२ मोसैजगमेमनुजवड्ड होत
 सुनड्डभुवपाल ॥ तुमतेजीवतिसवधरायइसमभोकरिख्याल २३ ॥
 सौरठा ॥ सतकीवेहीवानपरकारजकेकारने ॥ देतआपनेप्राणताते
 मतिसंशयकरे २४ शंखचुड़तावेरदेधीकेमन्दिरगयो ॥ गरुडआव
 त्यहिहेरलगयोचलावनघोटका २५ पहिलेकुंवरवचाय तासीआ-
 पुनयोखियो ॥ बड्डरिक्कोधकरिधाव बपकोसुतभक्षणकियो २६ ॥
 दोहा ॥ बाजताकेदंडतेथोखितसोभरिपुर ॥ गिरउनिकटतावाम
 केनिरखतगिरीविसुर २७ बड्डरिचेतनिजतातसोकहिपठईसव
 बात ॥ आयेताकेदुःखमेमगनतिह्व बिललात २८ ताकेठंडनकोचले
 तिह्वंइवेदुःखपाय ॥ शंखचुड़तिनकोतहामिख्योसुमारगआव २९
 कहीटेरितिनगरुडसोअरेमूढसुनुवैन ॥ तेरोभक्षणराजसुतमोहिदि-
 लोकोनयन ३० सुनिकोताकेवचनकेगिरोगरुडभुवआय ॥ अंधी
 कोयाविप्रकोदीनोतनयनथाय ३१ राजपुचसोयइकहीबड्डरिगरु-
 डसुखपाय ॥ देवजीवकोआपनो मोसोकडसतभाय ३२ सुनोग-
 रुडजेपुष्यजगकरतपरायोकाम ॥ कहाहोतयादेइको संत्यकहत
 मतिधाम ३३ प्रसन्नतवगरुडनेकहीबपतिवरमांगि ॥ कहाआ-
 जतिसर्पकोभक्षणदीजेत्यागि ३४ जेतुमपहिलेइनेतेसवदेड्डजिवा-
 व ॥ बैनतेयतवअमतलैदीन्हेसकलउठाय ३५ यहकहिकेनिजधामको
 आबोबपतिकुमार ॥ मारगमेसगरेमिले खशुरवामपितुवार ३६
 पूछीवइबैतालनेसुनोबपतिधिरमौर ॥ अधिकसत्यभोकौनको क-
 हीआपनीदौर ३७ शंखचुड़कोअधिकसत सुनोवचनबैताल । कोसे
 भवोनरेशसो कहड्डवचनततकाल ३८ अंधीहे वहजातिकोबप को
 सुतबलधाम ॥ प्राणघातउरपतनही बाहीनिशिदिनकाम ३९ यह
 सुनिकोबैताखतव चख्योबड्डरितरुजाय ॥ ताहिवांधिकेबपतिवर च-
 ल्योबड्डरिसुखपाय ४० ॥

सोलहवीं कहानी ॥

सुन्दरी ॥ नृपसौंयहवातवैतालकही । चन्द्रशेखरएकपुरीसो-
रही ॥ तहँएकरहैविवहारकपूत । तिहिनामसुररुहैदत्तअभूत
१ तिहिगेहमेंएकसुतासुअनूप । उनमादिनि नामबड़ोजगरूप ॥
तववैखहृदययहचेतभया । नृपपैतकालहिदेशगयो २ ॥ मोतीदाम
छन्द ॥ नृपसौंयहवातकहीतवजाव । सुनौममवैनसुचित्तलगाव ॥
अहोवहवातहिमानियज । हितयामेअनेक बखानियज ३ जब
वातसुनीनृपनेयहभाष । तवदासअनेक लियेसुबुलाव ॥ बहिकी
तनयाकहँदेखहुजाव । कहौसबलक्ष्यमेंसोआय ४ लख्योभव
दूतनताकहँजाव । गयेसबरूपमेंआपविकाव ॥ सबैतनसुन्दररूप
निधान । ज्यहिदेखतदेवतजेअवसान ५ लखिदासनआपुसमाहिं
कही । तरुखीनृपकेयहयोगनही ॥ भुवपालजबैलखिहँवहवाम ।
सबैतजिराजकोदेहिंगेकाम ६ ॥ दोहा ॥ यातेयहबलिभापियेवहुत
कुलक्षणनारि ॥ यहीआयनृपसौंसकल भाषोदूतविचारि ७ कही
राजनेसेठिसौंहमलावकवहनाहि ॥ जाहुआपनेगेहको देहुअौर
कोआहि ८ नृपकोसेनापतिहुतौ दरुसेठनेताहि ॥ सुन्दरसुखद
सुशीलवह दरुबणिकनेव्याहि ९ एकसमयनृपजातहो सहितसवा-
रीसंग । सोठाढीदेखासदन निरखतबख्योअनंग १० लखिकेताके
रूपको विकलभयोनृपचित्त ॥ आयोअपनेमहलमें लियबुलावजन
मित्त ११ चौपदारपूछनलग्यो ब्यथाकहौमहराज ॥ जातेव्या-
कुलचित्तहै सोकरिलावैकाज १२ कहीनृपतिइककामिनी देखी
अद्भुतनेन ॥ उपमाताकीवनतिनहिंदूजीजगमेंहैन १३ बडरिदास
नेयहकही बहँसेठिकोबाल ॥ लायोताकोव्याहिके सेनापतिभुव-
पाल १४ लक्षणदेखनजेप्रथम पठयेतेभुवपाल ॥ तेलीनेसबबोलिके
कयोषचनविकराल १५ रतिपतिज्यहिदेखतलजेदूजीनहिंजगरूप ॥
तुमनेवातवनायके ताकोकहीकरूप १६ यहकहिकेकीन्हैविदा
जेतिकआयेदास ॥ राजाताकीयादिमें बैयोनिपटउदास १७
ताहीक्षणसेनापती आयोनृपकेधाम ॥ दूरहितेकरजोरके कीन्ही
बडरि प्रणाम १८ महाराजजाकेलिये पावतइतनोखेद ॥ सो
दासीहैआपुकी यामेंनहिंकहुभेद १९ ॥ चौपाई ॥ सुनतवचन
क्रियकोघनरेशा । तेरेवचनभयोअहंसा २० होतअधमौपरतिय
गामी । बडतकुबुद्धिहियेतुवजामी २१ सेनापतिबडवातवनाई ।

ऋपतिहृदयनहिंएकज्जभाई ॥ पायखेदहियव्याकुलराजा । गयो
 लोकसुरसाजिकेसाजा २२ सेनापतिनिजगुरुसनजाई । कहीकथा
 संगरीसमुभाई ॥ समतियकारणदीन्हेंप्राना । उचितजायसमु-
 भावज्जज्ञाना २३ जायऋपतिकीचितावनाई । चन्दनअगरकाठ
 बज्जलाई ॥ जबलगिचितहिअग्निनहिंदीन्हों । सेनापतिनेयह
 मतिलीन्हों २४ अरनऋपतिकेसंग सोगयज्ज । रबिहिप्रणामकरत
 सोभयज्ज ॥ जोरिकछउरविसोंदोउहाया । जन्मजन्मयहपाज्ज
 नाथा २५ यहसुनिसेनापतिकीवामा । गईगुरुकेगृहमतिधामा ॥
 पावरजायसुगुरुकीनारी । सतीहोनकहठुरतसिधारी २६ जन्म
 जन्मपतिपदमनेह्ज्ज । कबज्जंनघटैमांगवरयेह्ज्ज ॥ यहकहिबज्जुरि
 कहेउबैताला । सुनज्जबचनममप्रियभूपाल २७ इनमहँअधिकभयो
 सतकाको । ऋपसमुभायकहौमोहिंताको ॥ कहविक्रमसुमुबचन
 सुहावा । राजाअधिकसत्यकहपावा २८ जिनसरवसदीन्होंनिज
 नारी । दियेप्राणनिजनाथविधारी ॥ ताकेअधिकसत्तमोनाहीं ।
 यहनहिंआवतमोमनाहीं २९ खामिहेतसेवकदियप्राणा । पति
 हितवामसोबेदबखान ॥ तातेअधिकसत्तराजाकर । भयेउसुनज्ज
 बैतालसुमतिवर ३० ॥ सोरठा ॥ यहकहिकैबैताल चख्योबज्जुरिवा
 ह्ज्जपै ॥ ऋपतिजायउत्ताल बांधिताहिगृहलैचल्यो ३१ ॥

सत्रहवीं कहानी ॥

तोमरछंद ॥ सुनिबेवचनमहताज । उज्जैननगरीसाज ॥ तहँमहा-
 सेनिनरेश । करैराजमनज्जसुरेश १ द्विजदेवशर्मानाम । ताकेतनयअभि-
 राम ॥ ताकोगुणाकरपत । सोखेलजूपअभूत २ त्यहिहारिपितुधन
 दीन । हूँगेहबंधुमलीन ॥ दिनकादिघरसेसोय । त्यहिबुद्धिअपनीखो-
 य ३ बलिकैगयोक्वज्जदेश इकलख्योयोगीभेश ॥ धनीरमायेपास ।
 जहँबैठियोसविलास ४ बोख्योसोयोगीबैन । तूकौनहैसुखदैन ॥ कहु
 देज्जभाजनमोहिं मैदेज्ज आशिपतोहिं ५ इनलायमनुजकपाल । द्विज
 केनिकउतकाल ॥ लाग्योसुद्विजकोदैन इनकहीलेतवनैन ६ तब
 पख्योयोगीमंच । कहुजानियेनहितंच ॥ तबहीसोयछिनिआय । बोली
 बचनशिरनाय ७ जोकहैकारजमोहिं । मैकरिदिखाजंतोहिं ॥ इन
 कहीमोजनअर्वाकरवाउद्विजकोसर्वदइनकरीमायाजाय । इकभवन

सुखदवनाय ॥ तामेंसुद्विजकोलाय । करवायभोजनभाय ६ वसिरैनि
ताकेसंग । कियभोगभांतिअभंग ॥ पुनिप्रातसमयोपाय । गइभवनको
सुखपाय १० द्विजगयोयोगोपास । कहिवचनसहितज्जलास ॥ वह
गईअपनेधाम । कहिजायपछोनाम ११ यहकहीयोगीवात । ज्यहि
आवविद्यातात ॥ यहदियोकहित्यहिमंच । जामेवसेसवतंच १२ वा-
लीसदिनवहिसाधि । जातेनशेसबव्याधि ॥ यहचख्योताकेकाज । जो
कछोयोगीराज १३ जवबीतगयोसबदोस । तवतौभयोहियहोस ॥
पुनिपासयोगीआय । तासोकहीसतभाय १४ यहकहिवख्योनिज
गेह । पितुमिल्योसहितसनेह ॥ बडकहीकरखावात । इकदिवसकह
रछोतात १५ बोख्योगुशाकरवैन । पितुसुनौवचनसुखेन ॥ सन्सार
मलकोमूल । यहिरमतजनमतिभूल १६ ॥ दोहा ॥ जैसेकंचनपाचमें
भरोहलाहलनीर ॥ तैसेमलकरग्रथितहै व्याकुलसकल शरीर १७
मातपितागुरुकीकहं जोकरनिन्दाकोय ॥ सोभोगतहैनर्कको
वृथाधर्मकोखोय १८ तातमनुषसंसारमें नितहीआवतजायं ॥ जैसे
गजकेचरणमें सबकेपावसमायं १९ जैसेबुंदबुंदनीरकरि होतसो
जलहिसमान ॥ तैसेजानोतातजग भलिनकीजमान २० कठिनगृह-
स्थीधर्महै खलसुयोगग्र्यास ॥ यहकहिकैनिजगेहते विदाभयोस-
विलास २१ आयोयोगीकेनिकट मंचसाधनाकीन ॥ नहिआईफिर
वक्षिनी कारणकौनप्रवीन २२ ॥ चौपाई ॥ सुनुवैतालकारणग्रह
भाई । साधककेचितदुविधाआई ॥ यहितेसिद्धिभईनहिंताहो ।
कारणऔरनहीइहिमांही २३ बुद्धिबलकितोकरेनरकोई । लिखे
अंकविधनाकरजोई ॥ सोसबहालसुनजुवैताला । भूठोजगकरसब
जंजाला २४ यहकहिवडरिषडेउतरजाई । विक्रमनिजकरबांधेउ
जाई ॥ लेकरचलेनकीन्हीठीला । कोजानैहरिकीयहलीला २५ ॥

अठारहवीं कहानी ॥

दोहा ॥ अतिअद्भुतमतिकीसुखद वपवरकथाअपार ॥ मतिअनु-
सारकहौकछु सुनजुवचनममसार १ ॥ गीतिकाछन्द ॥ कुलिकपर
इकग्रामसुन्दरसुखदसबहिसनपहै । राजासुदधीराजतहकोकरे
मतिअनुरूपहै ॥ तानगरमेंइकसेठताकीधनवतीइकवाजहै । त्यहिस

रिसबरललिब्बाहकीन्होअतिहिहूपविशालहै २ ताकेभईइकक
 न्यकाखककुक्कवहस्वानीभई । ताकेपितासुरलोकलीन्होशोकता
 क्रमतिरई ॥ भाईभतीजनलियोत्यहिधनकाढिनिजवरतेदई । चली
 पितुकेगेहसोईसाथमेंपुचीलई ३ त्यहिराहमेंइकचोरदेख्योटंग्यो
 शूलीसाथहै । भलेअज्ञानकपावताकेलग्योयाकेहाथहै ॥ उनकहीको
 नेदुःखदीन्हो ईनकहीममभूलहै । करिमाफमेरीचकसारीटंग्योतु
 समसुलहै ४ तबकहीचोरसाज्ञानवाखीदुःखनहिंकोउदेतहै । जब
 ध्येकर्मनफांससगरो मानचितयहलेतहै ॥ तबवामनेयहवातपूछीकौ
 नतेरीजातिहैकहै । चोरककुक्कहिजातहिअतिनीचममउत्पातिहै
 यातेकठेनहिंप्राणमेरेब्बाहमेरोनहिंभयो । जोदेहिअपनीपुचिकातु
 मोलजगमेंलेलयो । इककोटिद्रव्यसुदेऊतोकोसुयजगमेंहोयगो । लो
 भमेंमतिफांसीताकीजातिकोबलखोयगो ॥ दोहा ॥ दीनीअपनीपुचि
 काशूलीभामरफेरि ॥ कठेचोरकेप्राणतबलियोअशरफीठेरिइककु-
 कद्रव्यनिजसाथले गईपिताकेदेश ॥ पडंचिव्यवस्थासबकही सकल
 जनायोभेश ७ भ्राताकोतबसाथले आईअपनेवास ॥ द्रव्यलईसब
 साथमें कीन्हैभोगविलास ८ भईअवस्थातरुतिहि चढीअटारी
 जाय ॥ देख्योद्विजकोपुणइक भयोकामसरसाय ९ कहीसखीसो
 वातइक मममाताठिगजाय ॥ बोलिलाउद्विजपुचको मेरेचितकेचाय
 १० सुनतलियोद्विजबोलिकै तानेअपनेगेह ॥ हंसिबोलीजातइहां
 करिहैवाससनेह ११ ममपुच केतंगनिशिकरतभोगविलास ॥ तोहिं
 अशरफीदेऊंशत समुझहियेवडभाग १२ करीवातमंजूरतिन गई
 निशाथीआय ॥ काटीनिशित्यीभोगमेंभयोप्रातसरसाय १३ द्विज
 कोसुतवरकोगयो यहनिजसखियनपास ॥ पूछीतिननेरातिकहै की
 न्होभोगविलास १४ नामीशरअचतुरनर दाताअरसरदार ॥
 स्त्रीपालकइतनेनकोमूललहेनहिंनार १५ गर्भरह्योताकेतनय भयो
 व्यतीतेमास ॥ तानेखपनीयहलख्यो कीन्होसकलप्रकास १६ शीश
 जटामस्तकलसत हिमकरलसतललाट ॥ सुयडमालकहनजटित मा-
 यारहितउचाट १७ तानेखपनेमेंकह्यो मंजूषासुतराखि ॥ साथ
 द्रव्यदपहारपर राखिआउयहभाखि १८ जाप्रकारखपनीलख्यो
 कीन्होसोईवात ॥ आईदपकेद्वारपै राखिसुतहिअवदात १९ इत
 दपनेखपनीलख्यो कहेसदाशिववैन ॥ तरेगृहमेंपुचइक आवतुहै
 सुखदैन २० प्रातभयोदपनेतनय लीन्होतुरतउठाव ॥ मंजूषाअरु

द्रव्यको दीन्हीं भवनधराय २१ पण्डितलीन्हीं बालिके पूछोसगरो
 भेद ॥ लक्ष्मणसबसुतकेकहा देखिआपनीवेद २२ लक्ष्मणसबवत्तीसहैं
 पुरुषअंगमेंराज ॥ तैसबहैं यहिअंगमें निरवयकरिहेराज २३ दियो
 दानविप्रनवज्जत विदाकियोभुवपाल ॥ भयोकुलाहलनगरमें वृष
 सबकियेनिहाल २४ भईखुशीहैनगरमें सुयशपढतहैंभाट ॥ वेदधरनि
 द्विजकरिहैं छायेगुणकेठाट २५ सकलशास्त्रमेंनिपणभो बीतेनवमी
 वर्ष ॥ चौदहविद्यानिपुणलखि वृषमनकीन्हींहर्ष २६ करतधर्मयुत
 राज्यवह प्रजासुखितदुखनाहिं ॥ एकदिवसऐसीकथा आईवृष
 चितमाहिं २७ मातपिताकेहेतुकछु कीजैयत्ननिहारिं ॥ गयोगया
 हरदत्तवृष दयाचित्तमेंधारि २८ लहतसोईवैकुण्ठकह दयाधरत
 जाचित्त ॥ ऐसोतूलोभीकुटिल हरिसेवतहैनित्त २९ गयोजवैफलगू
 नदी देनपिण्डकोदान ॥ तीनहाथइकठेकठे लैनकाजसमिधान ३०
 चिन्ताकीन्हींवृषतिमन दीजेकाकेहाथ ॥ योग्यकौनकेपिण्डहै
 कहिविक्रमनरनाथ ३१ पिण्डचोरकोउचितहै कहीबातअवनीश ॥
 कहवैतालकैसेवृषति कहछुसोविश्वावीश ३२ द्विजनेतोविक्रयकि-
 यो बीजआपहीजानि ॥ राजानेवज्जद्रव्यलै पालनकीन्हींमानि ३३
 सकलद्रव्यहीचोरकी तातेवाकियोग ॥ पिण्डदानताकोभयो सम-
 भोमतिकेभोग ३४ ॥ तामरकंद ॥ यहसुनततरुपेजाय । त्योचण्योहै
 चितचाय ॥ वृषताहिबांधिसिताव । लीन्हींहैमगकरिचाव ३५ ॥

उन्नीसवीं कहानी ॥

दोहा ॥ चिचकूटइकनगरहैसुनुविक्रममतिधाम ॥ वृषदत्तराजा
 तहां करतनीतिमयकाम १ गयोवृषतिआखेटको एकदिवससुख
 पाय ॥ भूलिमहावनमेंगयो देखततहंचितचाय २ सुखदसरोवरएक
 तहंचि कथितसरसिजरंग ॥ चह्लंओरतरुपुष्पवज्ज फूलितफलितलवंग
 ३ शीतलमन्दसुगन्धतहंचह्लंदिशिवहतसमीर ॥ गुंजतमधुकरपुंज
 तहंच सरवरसलिलगंभीर ४ अश्वदियेतरुवांधिकै वृषतहंचिबनिस्या
 म ॥ वृषिकन्याआईतहां लेनप्रसूनसकाम ५ लखिकैताकरूपको
 वृषकेउपजोनेह ॥ जबवहअपनेगृहचली तबबोख्योमखयेह ६ कौन
 तुम्हारीरीतियह छांडिअतिथवनवीच ॥ पूजनीकसोजकछो जो
 उत्तमगृहनीच ७ खडीरहोवृषिकीसुता भयेनैनजवचारि ॥ इतने

भेद पिङ्गलहां देखन आयोवारि ८ राजानेज वदत पिलख्यो कीन्हो
 दण्डप्रणाम ॥ पछीतानेराजसो छां आयो क्यहिकाम ९ कहीनप-
 तिआखेटको आयोहौकरिनेह ॥ आयमहावनमेंपररो भूल्योअप-
 नोगेह १० कृपिनेदपसोवचनयक कछ्यावज्जतसमुभाय ॥ लीतपापही
 कहीक्योवनकेजीवसताय ११ जाशरथागतकोलखतदेतअभयकोदान
 वसतदेवकेलोकसो सत्यवचनदपमान १२ कहीनीतिकृपिनेवज्जत
 दपसवकरीप्रमान ॥ बोख्योवैनप्रसन्नहूँ राजमांगवरदान १३ जो
 तुमभयेप्रसन्नकृपिकन्याअपनीदेज्ज ॥ दीन्होदपकोव्याहिकै करि
 कैतासोनेज्ज १४ लेकरिपत्नीसंगमें चल्योआपनेधाम ॥ अरुतभयेरवि
 मध्यमें कियोतहांनिधाम १५ ताहीनिशिकेमध्यमें ब्रह्मनिशाचर
 आय ॥ कहीराजसोवामतुव भक्षणकरौवनाय १६ तानेयहउत्तर
 दियो छाड़ोकौनज्जरीति ॥ सातवर्षकोविप्रसुत देवहमैकरिप्रीति
 १७ राजकछ्योदिनसातमें ऐयोमेरेधाम ॥ सुनिकैऐसेवचनसो गो
 निजबलअभिराम १८ राजाआयोगेहमें संगरूपवरनार ॥ मंचीने
 सुनियहकथा कीन्होहर्षअपार १९ ॥ तोमरछंद ॥ मंचीनिकट
 बैठारि । दपकछ्योवचनउचारि ॥ सबकहीवनकीवात । एकसकरी
 जाघात २० मंचीसुनेसबवैन । यहकहीतज्जअचैन ॥ इकहैमपुत्तल
 लाय । दियमणिनसोणइवाय २१ त्यहियरोमध्यवजार । चौकीदई
 बैठार ॥ जोलेयपुत्तलहैम । सोदेयसुतकरिनेम २२ जोदेइसुतधिर
 काटि । सोलेइपुत्तलडाटि ॥ यहकहिदईसववात । जाकरैघातम
 घात २३ दिनहैगयेजावीति । काह्जनकियपरतीति ॥ दुर्बलसइकहि-
 जआय । निजवामकोससुभाय २४ मेरेसोसुतहैतीनि । जोदेयएक
 प्रवीन ॥ तोआवसोनोधाम । जातेचलैजगकाम २५ वजसुनतबोली
 वैन । छोटेनदेनकहैन ॥ पितुबड़ेकोनहिंदेय । मध्यमकछ्योमनमेय २६
 मध्यमकहैसुतवैन । मोहियेमेंअतिचैन ॥ पितुकोसरैजाकाम । तो
 देहहकेकाम २७ ॥ दोहा ॥ माताघनकेहेतुजा वैचिपुचकोलेय ॥
 राजाकरैअनीतिको वृथादण्डकोदेय २८ रखवारनकोसुतदियो
 द्विजनिजकरसोआय ॥ लियोसवामनहैमको पुत्तलगेहमंगाय २९
 देखोजगमेंधनबड़ो कियबिक्रयसुततात ॥ कोलेभोगेभोगवे करिनि
 जआतमघात ३० मंचीकोतबलायकै रखवारनसुतदीन ॥ आयोरा
 जसगेहदप वीतेदिवसप्रवीन ३१ पूजादपनेरक्षकी कीनीविविधि
 प्रकार ॥ खड़ोकियोबलिदानको द्विजसुततुरतपुकार ३२ बलिके

देतेसमयवह हैस्योविप्रसुतधीर ॥ बङ्गरिरोयताहीसमय धिरका
 द्योवृषवीर ३३ कविजनसांचीकहतहै नारीदुखकीखानि ॥ करत
 मोहमहँसहरते नर्कदिवावतिजानि ३४ इतनीकहिबैतालने कहे
 वृपतिसौबैन ॥ भरतसमयद्विजक्योहँस्यो मोहिं वतावडसैन ३५ ॥
 तोमरछंद ॥ सुनियेवचनबैताल । बङ्गसमभिमनमेवाल ॥ करवाल
 रक्षामात जानितहिपालततात ३६ पुनिअभयदेतसोराज । सबदेव
 रक्षकसाज ॥ तिनसकलछांड्योधर्म । सबदोषहैममकर्म ३७ यहस-
 मुक्तिचितकेबीच । बालकहँस्योलखिमीच ॥ रोयोसमुक्तिहियवाल ।
 सबडरतहैनिजकाल ३८ सुनिबातयहबैताला पुनिचञ्चातरततकाली ॥
 वृपताहिगहिकेहाथ । लैचल्योअपनेसाथ ३९ ॥



बीसवीं कहानी ॥

सुनङ्गवृपतियकनग्रहै तिहिविशालपरनाम ॥ विपुलेश्वरराजा
 तहां सकलधर्मकोधाम १ तासुनगरमेंबणिकदूक अर्धदत्तसुखधाम ॥
 ताकेकन्यासुखददूक मेंमंजरीनाम २ भईतरणिनिजगेहपै चढी
 तमासेकाज ॥ देखिरूपव्याकुलभई लखिकैएकद्विजराज ३ ॥ कृप्यै ॥
 लख्योविप्रकैपुत्रभईमनमोहितनारी । इतद्विजसुतदुखपायशुद्धतन
 सकलविसारी ॥ गयोआपनेधामकामतनअधिकसतायो । बणिक
 सुताइतगिरीखेदसगरेतनछायो ॥ तबसखिनउठावआनिकैनीर
 प्यायमुखमेंदियो । बीजबलैनिजनिजकरनिबङ्गप्रकारतनपैकियो ४ ॥
 दोहा ॥ अरेनिशाकरनिशिसमयहमैजरावतआनि ॥ सांचोतुवविषबं
 धुहैतजतनहीयहबानि ५ छांडिदियोमुनिताहिंजब कीन्होपानप
 योधि ॥ अबताकेबदलेसबै भारतविरहिनिसोधि ६ महाधिरहब्याकु
 लरहेबणिकसुतादिनरैन ॥ कछोसखीयहहाललखिधरिधीरअकर
 सैन ७ यहकहकेनिजगेहको गईसखीततकाल ॥ इनचितमेंदुखपाय
 के कीनोऐसोहाल ८ डारीफांसीग्रीवमेंखैचनलागीसोय ॥ इतने
 मेंसखिआयकेगहेदोजकररोय ९ डारीरस्सीकाटिकेकछोबङ्गत
 समुभाय ॥ लाजंतरेमिषको जणकरहोसुखपाय १० कमला
 करकेगेहमें गईसखीतिहिकाल ॥ वहांजायकेतिनलख्यो ताको
 ऐसोहाल ११ बीततिहीजोबामपै विधाअनेकअपार ॥ सोई

द्विजसुतपैलखी बोलीवचनविचार १२ कमलाकरचलसंग भमनाथ
 करौतवपीर ॥ गयोसाधताकोखई विप्रपुत्रधरधीर १३ देखीतोने
 बाभवह व्याकुलविरहविहाल ॥ सांसलैतथाविप्रको गयोप्राण
 ततकाल १४ गयेदुङ्गनुकोसाथलै मरघटमेसबलोग ॥ साधकियो
 अतिदुङ्गने लखादैवकोयोग १५ आयोहोपरदेशतेवखिकसुता
 पतिसोय ॥ लखीवामतानेखईपरपतिकेसंगजाय १६ जरतिहती
 तिहिसंगमे लखियहचरितनिदान ॥ हूँकैव्याकुलविरहमें दीने
 यानेप्राण १७ यहलखिकेसवनगरकेकहनलगेएवैन ॥ ऐसोअचरज
 आणलौ देख्योसुन्योचनैन १८ कहवैतालहनतीनिमें अधिककाम
 होकाहि ॥ वृपतिकहीताकोसोपतिजरो तियाकोचाहि १९ ॥
 तोमरछंद ॥ तिहिपर्मकामीआनि । बैतालउरमेंआनि ॥ यह
 सुनतवचनअघाय । पुनिचष्योतरुपैजाय २० तिहिसंगविक्रमवीर ।
 लैवख्योहैमतिधीर ॥ यहभईपूरीवात । कहुअौरचर्चातात २१ ॥

इकीसवीं कहानी ॥

चौपाई ॥ कहवैतालसुनुवचनसुहावा । जयफलनगरवृपतिहक
 पावा ॥ बईमानराजातहँअहई । नीतिनिपुणताकोवशचहई १
 ताकेतनयचारिभेभाई । चारोकुमतिपितहि दुःखदाई ॥ एक
 जुआरीकरवदकर्मा । वेश्यागामिद्वितीय अधर्मा २ तृतीयजार
 जानहिंमृपजेही । चौथानास्तिकपालकदेही ॥ एकदिवसवृपत-
 नयबुलाये । नीतिवचनतिनकोससुभाये ३ चलहुसुमतितनिकुमति
 कुठारी । ज्ञानतरुहिजोकाठनहारी ॥ सोचिज्ञानजलतरुअति
 जामा । दशदुन्द्रीसोइ शापानामा ४ यहिविधिपितु बडुज्ञान
 सिखावा । नहिंविश्रामतासुममपावा ॥ चारौतासंगगयेविदेशा ।
 पढ़नशास्त्रमनकरअदेशा ५ कहुककालमेविद्यापाई । आवतहते
 गेहचहुंभाई ॥ मारगमाहिलख्योयकख्याला । भयेविकललखि
 चरितविशाला ६ कुंजरमरगोलियेमगराजा । काटतदाससुवि-
 क्रयकाषा ॥ इनचारिनयहवातचलाई । विद्याकहअजमावहुंभाई
 ७ ॥ दोहा ॥ दैकरिताकोकहुकषन विदाकियोततकाल ॥ जोहि
 तासुकोसकलतन मंचपष्योकरिख्याल ८ भयोसिंहचैतन्वतव नारे
 चारोभात ॥ कहवैतालराजासुबहुअहुतचरितसोतात ९ इनसे

मरुखकौनसो भयो कहइ सुभाय ॥ नृपमरुख है वाह ही जाने दिवो
जिवाय १० यह कहि कै बैताल तब तुरत चयो तरुजाय ॥ नृपताको
करवां धिके चलत भयो सुखपाय ११ ॥



बाईसवीं कहानी ॥

गीतिका छंद ॥ नगरी लसै शिवपुरी भुवपै धर्म अरु धनसो भरी ।
राजा निदग्ध सराजताको करै हरिपदमति धरी ॥ ताको नगर बसि
द्विजनरायन नामता सुबखानिये । इकादिन करीति नचित्त चिन्ता
बनसट्टि प्रमानिये १ भई कायाजीखं मेरी चरित कछु अबकी जिये ।
पैठि दूसरि देहमें सब जगतके सुखली जिये ॥ यह जानि चित्त विचारि
दृढ़ करि धँस्यो दूसरि देहमें । धँसत समय वह हँस्यो योगबोध अपने
गेहमें २ घरके सबैति हचरित जानत आयति ननेय कह ही । योगी
भवो मै छांड़ि माया यहै चित्त आनोस ही ॥ इतनी कह ही पुनि पढ़न
लाग्यो ज्ञानकी चरचा सबै । केतिक कह हीति हि योगचरचा सकलते
तापै फवै ३ ॥ तो मर छंद ॥ यहि भांति ज्ञान अपार । मुखसे कहै उख
सार ॥ जगसकल आवत जात । मायासुद्धत उत्पात ४ जानोसो
मोह अनेक । तिहि जनित खल्प विवेक ॥ जगमें जिते नर जान । ते
मोह हीकी खान ५ जो करत है अभिमाम । तैसकल अवगुण खान ।
धरियोगको शिरभार ॥ तपतपत अग्निमभार ६ संसारमें नहिं सार।
लखिले छचित्त विचार ॥ करियोगको जगनाम । याते फिरत सब
काम ७ तैलहत है दुखनीच । जब निकट आवति मीच ॥ यमपास किं-
कर आय । करि चास ना बड़ भाय ८ एक है मुखते वै न ॥ सबको
लखयो निजनैन ॥ तिनयोगसाधनकीन । करिय तब बड़तनवीन ९ यह
कहि बड़रि बैताल । बोल्यो बचन ततकाल ॥ क्यों हँस्यो द्विजवर आप ।
पुनि रोइयो किहि ताप १० मोसो कह ही सुभाय । सुनिक है विक्रम
राय ॥ जादेहमें सुखपाय । बड़ दिये काल विताय ११ निजसिद्ध विद्या
काज । पुनि द्वितय देही साज ॥ पूरी भई यह बात । द्विज हँस्यो यो सुनु
तात १२ नृपके बचन सुनिहाल । तरुपै चयो बैताल नृपताहि बांधिसु
ढार ॥ संगलै चलोति हि वार १३ ॥

तेईसवीं कहानी ॥

सुअंगकन्द ॥ बहुरिबचनवैतालराजसोबोख्यो । लसैधर्मपरग्राम
 भूमिमेंतोख्यो ॥ गोविन्दनामसुविप्रलसैताठौरहै । चारितासुके
 प्रचद्विजनशिरमौरहै १ अपनेपितुकोवाक्यसदासोपालते । गुणवि-
 द्यामेंचतुरउमरेवयवालते ॥ एकपुत्रतिनमाहिंगयोसुरलोकको ।
 भयोपितादुखलीनकियोअतिशोकको २ ताकेदुखमेंपागिपितादुख
 पाइयो । ताकीसुनिकेविपतिसुशर्माआइयो ॥ कछ्योताहिससुभाष
 बहुरिबिधिज्ञानहै । यहमनुष्यकीदेहसदादुखखानहै ३ पहिले
 मातागर्भजवैहियआवही । आयगर्भकेबीचबहुरिदुखपावही ॥ बहुरि
 तरुषतापायकामिनीसंगमें । पावेतबह्नांदुःखरंग्योतारंगमें ४ बहुरि
 बन्धुनिपायदेहदुखपावही । शिथिलहोतअंगअंगसुसुखःनशावही ॥
 यहभूठोसंसारदुःखकोमूलहै । यामेंसुखनहिंरंचपलहिंपलप्रलहै ५
 दुरैजायकाठौरकालजबआवही । करैअनेकनयत्रबचननहिंपावही ॥
 सकलशास्त्रकोछानिकरेजोज्ञानहै । मरुखजड़तापायपापमयजान
 है ६ इतनीमनुषसुआयटयाहीजातहै । शयनसमयनहिंनेकसुबुद्धि
 रहैतहै ॥ बहुरिअवस्थादृढ़बालदुखपावई । शेषरहीवयजोयकुयो
 गनशावई ७ जैसेजलकीलहरजीवयो जानिये । अमतरहतचङ्गओर
 सुचंचलमानिये ॥ यातेसुखनहिंदेहसुनोममगायहै । सुखदुखसगरी
 नातदेवकोहायहै ८ कलियुगकेबलपायरह्योजगछायके । सत्यधर्म
 मर्त्रीदगईसुनशायके ॥ राजालोभीसस्वभूमिनहिंदेतहै । दुराचार
 रतहोयमनुषदुखलेतहै ९ नहिंद्विजकोसन्तोषवामचंचलभई । पितु
 निन्दाकरमुचभीतिसवनधिगई ॥ मातपितासुतबन्धुकासनहिंआइ
 है । कोवलपुत्र्यप्रौमापसुआयसताइहै १० देखतएसबचरितमनुष
 मिजनयनहै । तोह्नुबुधिकोमहदुखहतनहिंचैनहै ॥ देखोचितविचा-
 रकहैंअहख्यालहै । सांधातासेभयतचैनहिंकाळहै ११ जिननेवां-
 ध्योसेतुसमुद्रजोबीचमें । रावससेबलवानमरेतेमीचमें ॥ जलपरयल
 परजीवभगनचरणानिये । इनह्नुंभक्षतकालसुनिश्चयमानिये १२ आ-
 वजगतकोमध्यलहतसबदुःखहै । अहुरिकेघदलीनतिन्हैसबसुखःहै ॥
 इतोकाहोससुभाषजवैष्टपिराजने । सुतसौकहोबलाथबचनद्विजरा-
 जने १३ करतयहामेंयज्ञसमुद्रतुमजाइयो । देकरिकहुइकद्रव्यसक
 धुपलाइयो ॥ आतातीनोंसंगचलेसुखपायके । गयेसमुद्रकेतीरकछ्यो

चित्तचायके १४ लीनोकच्छपजायसुधीमरबोलिके । आपुसमेंतक-
 रारकरीमतिखोलिके ॥तीनिज्जंमेसंताहिनाहिकोउलेतहै । आपुस
 मेंकरिबादचित्तदुखदेतहै १५ ॥ दोहा ॥ भोजनमेंमैंचतुरहं कहो
 प्रथमसुतवात ॥ नारीराखनमेंचतुरकह्योद्वितियअवदात १६ ॥ सं-
 रठा ॥ कह्योतीसरबैन शय्यासावनचतुरमैं ॥ थोकहितजिकेचैन
 गयेनृपतिकेद्वारपै १७ ॥ छन्द ॥ गयेनृपतिकेद्वारसबैदुःखपायकै ।
 राजासोयहकथाकहीसमुभायकै ॥ नृपनेपुछीकथाकरतक्योबाद
 है । मेरेआगेआयकरोफिरयादहौ १८ तीन्योकहेसुनायजुदेगुण
 आपने । लईपरीक्षाराजमिटेदुखदावने ॥ कियोबहुतसनमानजानि
 गुणखानिहै । परखेतिनहिबनायदियोसुखप्राणहै १९ यहकहिकै
 बैतालनृपतिसोबोलियो । कह्योकौनहैसुघरनामस्थिहिलियो ॥
 कहविक्रममहराजसेजोज्यहिज्ञानहै । सोईचतुरसुजानबडोबधि-
 मानहै २० इतिकसुनतबैतालचब्योतरजायकै । विक्रमपाछेधायग-
 ह्योअकुलायकै ॥ वांध्योनिजकरताहिल्योलेगेहके । हियेमध्यसुख
 पायसुसांवेनेहके २१ ॥

चौबीसवीं कहानी ॥

दोहा ॥ नृपइकदेयकलिंगहै धरणीतलमेंतात ॥ यज्ञधर्मद्विजलहैं
 बसे सुनीतहैंकीवात १ ॥ तोमरछंद ॥ तिहिसोमदत्तायाम । सूर-
 तिमनोहरकाम ॥ सोकरतयज्ञसुखेन । तावामकेसुखदेन २ प्रगच्छो
 तनयअभिराम । सोसकलमतिकेधाम ॥ थोबहुतबीतेकाल । विद्या
 पढीशिशुहाल ३ हादशवर्षगेबीति । पढिचुख्योशास्त्रविनीति ॥
 सोसुघरअतिहीवाल । पितृकीसुआज्ञापाल ४ आयोसमवताला-
 गि । सुतनयोप्राणहिल्यागि ॥ अतिभयोद्विजकोदुःख । समझाडि
 दीनोसुःख ५ तबज्ञातकेजनआय । लेबलेकंधचढाय ॥ लैधरयोभूमि
 मथान । सबलगेदेखनआन ६ तिहिलसोयोगीएक । करिवोग
 सहितविवेक ॥ तानेविचारीचित्त । इहदेहबसियेमित्त ७ बौचित्त
 दृढव्रतकीन । तादेहआयप्रवीन ॥ बैद्योभधेाततकाल । सबरहेकखि
 कैखाल ८ जबलखयोताकेतात । मनशोचिअज्ञतवात ॥ ताकोभधेा
 बैराग । गयोबेाहतनतेभाग ९ संसारसोसुखखे । पुनिहंस्योरोबेा
 सोय ॥ यहकहिवहुंरिवैताल । बोल्योबचनततकाल १० त्यहिकहो

विक्रमवीर । क्यों हँस्यो द्विजप्रवीर ॥ पुनिरौदयोक्यहिकाज । मो-
सोकहोमहराज ११ सुनुबचनवीरबैताल । द्विजलख्योअद्भुतख्याल ॥
सुतदेहमेसरसात । देख्योसीयोगीजात १२ लखितासुविद्यावीर ।
योहँस्योद्विजमतिवीर ॥ पुनिमाहकरिनिजदेह । रोयोत्रियेहिय
नेह १३ यहसुनिब्योतबजाय । संगलियोअपनेलाय ॥ लैचल्योअपने
साय । मारगगञ्जोअपनाथ १४ ॥

पद्मीसर्वां कहानी ॥

हरिगीतिका ॥ बैतालबोल्होसुनोराजावातइकसुनिलीजियेद-
च्चिखदिशाइकनगरसुन्दर धर्मपुरसुनिलीजिये ॥ तहँकोमहाबल
बड़ोराजाधर्मकोअवतारहे । तापचब्योइकऔरअपलियघेरसोइक
बारहे १ सबगईमिलिकैसैनअरिमेंनिपटजियदुखपायकै । रानीऔ
पुषीसंगलैकैगयोवनविलखायकै ॥ पडुंअबहुतसोदूरिमारगप्राण
कासमयोभवो । रानीऔपुषीछाडिताबलग्रामकेभीतरगयो २ त्यों
आथबेरोताहिभीलनयुइलाग्योहोनको । दोनोबराबरअरवाके
घटिकहैकहिकौनको ॥ इकयामभरिकेलेहेदोजवीरचित्तबढाय
कै । एकलखोतीरकपालअपकेगिरगोअमरिखायकै ३ इकअनि
कायोशीशअपकोलखेदुखरानीकियो । सोभईव्याकुल देखिपति
गतिमननऔरैवनकियो ॥ यहिभांतिबलिकैकोसईइकयकितहैबैठी
जहां । इतनेमेंअंद्रसेनिराजासंगसुतलीन्हेंतही ४ आखेटकरिवेवन-
हिंआयोपुषीतिनवइकही । कहँतेवरणकेचिन्हआवेकठिनवन
दुर्घटमही ॥ सुतनेकहीयहचिन्हराजावामहीकेजानिये । अबही
गईकोउलखडुंअलिकैवातचित्तप्रमानिये ५ ॥ दोहा ॥ राजानेसुत
सोकही जाकेहीरषपाव ॥ सोईतोकेदेहुंगोदूसरिमेंसंगलाव ह
बचनबढ़ऐसेभये आपुसमेंहीवीर ॥ आगेदेखेजायकै लखीदोउमति
वीर ७ बचनबढ़ऐसेभये लीन्हेंताहीरीति ॥ गयेआपनेमेहको करि
कैमनमेंप्रीति ८ रानीराखीकुँवरने ताकीसुतासुराज ॥ इनदुहुनके
सुतनमें नाताकौनसमाज ९ उत्तरआयोअपहिनिहं सुनतभयोअ-
ज्ञान ॥ हँ प्रसन्नबैतालने कह्योमांगवरदान १० एककहततोसी
अपतिमानहमारीवात ॥ योगीजाअवभूमिमें करिहैतेरीवात ११
काटेहमरोमाथजे जासुदावसमदेह ॥ शांतिशीलवहनामहै करि

मतितासोनेह १२ जबपूजनवहकरचुकै तोसोंकरिहैवैन ॥ करिप्र-
 णामसाष्टांगत समुक्किलीजियोसैन १३ ॥ सोरठा ॥ कहियोतासो
 बात राजनकासरदारमें ॥ नहिंकरिजानततात मोकोआपसिखा-
 इये १४ जबवहकरैप्रणाम खड्गतासुधिरकाटियो ॥ करियोयेही
 काम तबसुखराजाहोयत १५ ऐसेसबसमुभाव विक्रमकोसुचितो
 कियो ॥ चत्त्वोगयोसुखपाय कालिवतैवैतालतव १६ रहेएकनिशि
 यामके विक्रमसबलेसाथ ॥ आयोयोगीकेनिकट कहीजोरिदुज
 हाथ १७ योगीबहुतप्रसन्नहूँ कहैवृपतिसोवैन ॥ तकुलमेंसुरजभया
 लखिफूलतमैनेन १८ मंचनसोअभिषेककरि रावकाँलियोजगाय ॥
 कियोहोमबलिदानवह अपनेचितकेसाथ १९ सामंघीजितनीहती
 दक्षिणओरहिलाय ॥ सकलप्रीतिकेभावसो देवहिदईचढाय २०
 धूपदीपनैवेद्यदे वृपसोंकहीसुनाय ॥ करिप्रणामसाष्टांगत प्रभुता
 बढैबनाय २१ अतिअधीनहूँ वृपतिने दीनोंबचनसुनाय ॥ करिप्र-
 णामजानतनहीं दीजैमोहिंसिखाय २२ ज्योहीकरनप्रणामको
 योगीनायोशीश ॥ खड्गएकविक्रमदियो कायोधिरतवईश २३ ब-
 ड्ढरिआयवैतालने दियेपुष्पपरचाय ॥ समयभयोआनन्दको कापै
 वरयजार्सो २४ जोअपुकामारगोचहै करिकैमनमेंघात ॥ ताकोनि-
 रचयमारिये दोषहोयनहिंतात २५ अपनेसुखतेयहकही वरमांगो
 महाराज ॥ साहसलखिकैवृपतिको हूँ प्रसन्नसुरराज २६ राजानेतव
 यहकही कथासुयहसंसार ॥ भुवमण्डलकेबीचमें होवप्रसिद्धअपार
 २७ जबलगिरनिग्रशिगगनमें समुवृपवचनहमार ॥ तबलभित्तीयह
 कथा धिररहिहैसंसार २८ इंद्रगयोनिजलोकको करिकैबचन
 उदार ॥ तबदोनोंसबतेलमें दिवेवृपतिनेडार २९ भयेतासुकेवीरहै
 वृपसोंकहीसुनाय ॥ आजाजोकहुहोयसो करिहैचित्तलगाय ३०
 जबमेंसुमिरणतुवकरौ आवोतवममप्राप्त ॥ ऐसेउनतेवचनलै आयो
 अपनेवास ३१ निष्कण्टकहूँ राजतव करनलग्योसुखप्राय ॥ वही
 धर्मकीरीतिजग दीनोंदुःखनशाय ३२ कस्योसकलवैतालने वृपसों
 कथाप्रसंग ॥ दीनोंराजदिवायकै करियोऐसोसंग ३३ यहप्रसंस
 नरनाथको कृपापायकेईश ॥ सुवरजननपैजगतमें कृपाकरहुजग-
 दीश ३४ राजकाजमेंसुवरअति करतपरायेकाम ॥ यथनिधिगुण-
 निधिरूपनिधि नवनिधिनिधिवनश्याय ३५ ॥

विक्रम विलास समाप्तः ॥

Vertical text or markings along the left edge of the page, possibly bleed-through from the reverse side.

